उत्तर-पुस्तिका 1 से 5 तक

हिंदी व्याकरण भारती

संकलनकर्ती :
डॉ. मीनाक्षी गुप्ता

BLUE SKY
BOOKS INTERNATIONAL
2647, Roshan Pura, Nai Sarak,Delhi-110006
Phone : 98994 23454, 98995 63454
E-mail : blueskybooks@gmail.com

हिंदी व्याकरण भारती–1

1. भाषा

(क) 1. भाषा वह साधन है जिसके द्‌वारा हम अपने विचार बोलकर या लिखकर प्रकट करते हैं। 2. भाषा के दो रूप हैं–मौखिक भाषा और लिखित भाषा। 3. मुख से जो कुछ बोला व कानों से सुना जाता है, उसे मौखिक भाषा कहते हैं। 4. भाषा के कार्य हैं–बोलना, पढ़ना, बताना, लिखना, पूछना, समझना, सोचना और समझाना। 5. हमारे देश की राष्ट्रभाषा हिंदी है **(ख)** 1. अंग्रेजी 2. लिखित 3. मौखिक 4. भाषाएँ 5. सांकेतिक **(ग)** 1. ब 2. स 3. स **(घ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗ (ङ) स्वयं करें।

2. वर्ण और वर्णमाला

(क) 1. जिस मूल ध्वनि के टुकड़े न किए जा सकें, उसे वर्ण कहते हैं। 2. वर्णों के क्रमबद्‌ध समूह को वर्णमाला कहते हैं। 3. अनुस्वार का उच्चारण करते समय हवा नाक से बाहर निकलती है। 4. शब्द–रचना हेतु व्यंजन के साथ आने वाले स्वर–चिह्न को मात्रा कहते हैं। 5. जो व्यंजन दो व्यंजनों को मिलाकर बनाए जाते हैं, उन्हें संयुक्त व्यंजन कहते हैं। ये संख्या में चार हैं– क्ष, त्र, ज्ञ और श्र। **(ख)** 1. ग्यारह 2. वर्णमाला 3. अतिरिक्त 4. अ 5. 52 **(ग)** 1. अ 2. स 3. स 4. अ **(घ)** **क्ष**–क्षण क्षेत्र क्षत्रिय, **त्र**–त्रय त्रिकोण त्रिशूल, **ज्ञ**–ज्ञान अज्ञात ज्ञानी, **श्र**–श्रम श्रवण श्रमिक **(ङ)** 1. श्+ए+र्+अ 2. स्+ई+ट्+ई 3. ड्+अ+म्+अ+र्+ऊ 4. त्+इ+त्+अ+ल्+ई 5. ल्+अ+ड्+अ+क्+ई **(च)** आ ा, ई ी, उ ु, ओ ो, ऋ ृ, ऐ ै, औ ौ, इ ि **(छ)** म + ू + ल + ी = मूली, म + े + ल + ा = मेला, म + ा + ल + ी = माली, म + ा + ल + ा = माला **(ज)** तिल , घोड़ा , मछली , थैला, सूरज, हिरन

3. शब्द और वाक्य

(क) 1. वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं। 2. शब्दों के क्रमबद्‌ध समूह को वाक्य कहते हैं। 3. जिन शब्दों का कुछ अर्थ नहीं निकलता, उन्हें निरर्थक शब्द कहते हैं। **(ख)** 1. शब्द 2. निरर्थक 3. शब्दों 4. सार्थक **(ग)** 1. ब 2. अ **(घ)** हाथी, साँप, मछली, कटहल **(ङ)** 1. बरसात आ गई 2. रहमान मत भीग। 3. भालू नाच दिखा। 4. हमें खुश कर। **(च)** 1. केले के पेड़ पर केले लगे हैं। 2. पक्षी आकाश में उड़ रहे हैं। 3. बच्चे फुटबॉल खेल रहे हैं। 4. महिला खाना बना रही है।

4. संज्ञा

(क) 1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। 2. उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, बिहार, 3. जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, 4. आलू, गोभी, बैंगन, टमाटर **(ख)** 1. पुस्तक 2. फूल 3. पक्षी 4. भारत 5. आगरा **(ग)** 1. ब 2. अ **(घ)** घोड़ा, नाव, पेड़, पहाड़ी, आदमी, लड़का, चिड़ियाँ, फूल, नदी **(ङ)** 1. हाँ 2. हाँ 3. हाँ 4. हाँ 5. हाँ **(च)** मूली, पेड़, लड़की, झोंपड़ी।

5. वचन

(क) 1. शब्द के जिस रूप से किसी वस्तु या प्राणी के एक अथवा एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं। 2. जिस शब्द से एक प्राणी अथवा वस्तु का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। 3. जिस शब्द से एक से अधिक प्राणियों अथवा वस्तुओं का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। **(ख)** 1. पेंसिल 2. बच्चे 3. घोड़ा 4. तितली **(ग)** 1. स 2. अ **(घ) बहुवचन**-घोड़े , सड़कें, कलियाँ, मेले, तोते, धोतियाँ **एकवचन**-नदी, लड़का, बकरा, रुपया, रानी, आँख **(ङ)** 2. गाजर गाजरें 3. खीरा खीरे 4. ककड़ी ककड़ियाँ 5. भिंडी भिंडियाँ 6. मिर्च मिर्चें **(च)** बूढ़ी दीपक फूल मछलियाँ राखी।

6. लिंग

(क) 1. शब्द के जिस रूप से यह बोध होता है कि वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे लिंग कहते हैं। 2. शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष जाति के होने का बोध होता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं; जैसे-बैल। शब्द के जिस रूप से उसके स्त्री जाति के होने का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे-गाय 3. स्वयं करें **(ख)** 1. मोरनी 2. वर 3. गाय **(ग)** 1. अ 2. ब **(घ)** 1. बकरी 2. बैल 3. शेरनी 4. राजा 5. मोर 6. फूल 7. ग्वालिन 8. कुतिया **(ङ)** 1. भाई 2. मोर 3. गाय 4. पिता **(च)** जादूगर पुल्लिंग, नौकर पुल्लिंग, कद्दू पुल्लिंग, केश पुल्लिंग, पत्नी स्त्रीलिंग, नल पुल्लिंग, परी स्त्रीलिंग, मकड़ी स्त्रीलिंग, कछुआ पुल्लिंग, तोता पुल्लिंग, पति पुल्लिंग, छुरा पुल्लिंग, हवा स्त्रीलिंग, गोप पुल्लिंग, पपीता पुल्लिंग, चील स्त्रीलिंग।

7. सर्वनाम

(क) 1. जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। 2. 'कौन, किसने, किसे, किन्हें' आदि सर्वनाम शब्द प्रश्न पूछने के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं। 3. **बोलने वाला**- मैं हम; **सुनने वाला**-तू तुम **(ख)** 1. हम 2. मेरे 3. मैं 4. वे

(ग) 1. ब 2. स 3. ब **(घ)** 1. तुम यहाँ बैठो। 2. मैं जा रहा हूँ। 3. हम कल दिल्ली जाएँगे। 4. आप क्या कर रहे हैं? **(ङ)** 1. हमारे 2. वे 3. तुम्हारा 4. उन्होंने **(च) संज्ञा**- भारत, पक्षी, पत्ता, घर, कौआ, कंकड़ **सर्वनाम**- तुम, किसने, मैं, वह, ये, कौन **(छ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗

8. विशेषण

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं। 2. विशेषण जिन संज्ञा या सर्वनामों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेष्य कहते हैं। 3. विशेषण शब्दों की पहचान करने के लिए वाक्य में 'कैसा, कितना' आदि लगाकर प्रश्न पूछने पर उत्तर में जो शब्द मिलता है, वह विशेषण होता है **(ख)** 1. थोड़ा 2. ऊँचा 3. दो **(ग)** 1. ब 2. ब **(घ)** लाल कोट, गर्म चाय, गुलाबी पतंग, सूखा पेड़, हरी मिर्च, कड़वा करेला, खट्टी इमली, विषैला नाग, मोटा लड़का, ऊँचा पहाड़ **(ङ)** 1. काला 2. चौकोर 3. चार 4. थोड़ा 5. प्यासा **(च) पेड़**- ऊँचा, हरा, **टमाटर**- खट्टा, लाल, **लड़की**- सुंदर, छोटी, **घर**- बड़ा, पक्का।

9. क्रिया

(क) 1. जिन शब्दों से किसी कार्य का करना या होना पाया जाता है, उन्हें क्रिया कहते हैं। 2. क्रिया के बिना कोई वाक्य पूर्ण नहीं होता है। 3. वाक्यों में क्रिया का प्रयोग वचन एवं लिंग के अनुसार होता है। **(ख)** 1. उड़ती 2. धो 3. रंभाती 4. बजा **(ग)** 1. स 2. ब 3. अ **(घ)** 1. डरता है 2. बना रहा है। 3. फुँफकारता है। 4. लिखी **(ङ)** 1. झूल 2. खा 3. उड़ 4. चला **(च)** स्वयं करें।

10. विभिन्न प्रकार के शब्द

(क) 1. परस्पर समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। 2. जो शब्द परस्पर उल्टा अर्थ प्रकट करें, उन्हें विलोम शब्द कहते हैं। 3. वह उपयुक्त शब्द जो वाक्यांश के अर्थ को अभिव्यक्त करता है, 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' कहलाता है। **(ख)** 1. निर्बल 2. विष 3. राक्षस 4. कुसुम 5. किसान **(ग)** 1. स 2. ब 3. ब 4. ब 5. अ **(घ)** नरक, अचल, निराशा, डरपोक, प्रेम, पुराना, अधिक, अंत, पुण्य, अपयश **(ङ)** प्रातः, सपेरा, सैनिक, छात्र, सूर्योदय **(च)** फूल, सुमन; वृक्ष, पेड़; नयन, नैन; नृप, राजा; सर्प, साँप; सूर्य, दिनकर; चाँद, शशि; शेर, केसरी **(छ)** 1. निर्दोष 2. दर्शक 3. परोपकारी 4. श्रोता 5. दैनिक 6. शिकारी 7. निर्दय **(ज)** 1. हानि 2. अस्त 3. कोमल 4. दूर **(झ)** 1. (ब) 2. (स) 3. (द) 4. (य) 5. (अ)

हिंदी व्याकरण भारती 2

1. भाषा और उसके रूप

(क) 1. भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है। 2. वर्णों या अक्षरों के लिखने की विधि को लिपि कहते हैं। हिंदी भाषा की लिपि है–देवनागरी। 3. व्याकरण से हमें भाषा के नियमों का ज्ञान होता है। व्याकरण के तीन अंग हैं– वर्ण विचार, शब्द विचार और वाक्य विचार **(ख)** 1. भाषा 2. लिखित 3. रोमन 4. तीन **(ग)** 1. अ 2. अ 3. स **(घ)** हिंदी, तमिल, उड़िया, मराठी, तेलुगु, कन्नड़, उर्दू **(ङ)** गुजरात गुजराती, केरल मलयालम, तमिलनाडु तमिल, पंजाब पंजाबी, महाराष्ट्र मराठी, उत्तर प्रदेश हिंदी **(च)** हिंदी–देवनागरी, पंजाबी–गुरुमुखी, उर्दू–फारसी, अंग्रेजी–रोमन।

2. वर्ण-विचार

(क) 1. वह सबसे छोटी ध्वनि जिसके खंड (टुकड़े) न किए जा सकें, वर्ण कहलाती है। 2. किसी भाषा के समस्त वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं। 3. जिन वर्णों का उच्चारण करते समय किसी अन्य वर्ण की सहायता न लेनी पड़े, उन्हें स्वर कहते हैं। इनकी संख्या 11 होती है। जैसे–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ। 4. 'अं' व 'अः' वर्णों को अयोगवाह कहा जाता है। ये वर्ण न तो स्वर हैं और न ही व्यंजन। 5. जब दो वर्णों को जोड़कर लिखा जाता है तो ऐसे वर्णों को संयुक्त व्यंजन कहते हैं; जैसे–क्ष, त्र, ज्ञ और श्र। **(ख)** 1. ढ़ 2. वर्णमाला 3. वर्ण 4. विसर्ग **(ग)** 1. अ 2. स 3. स **(घ)** काटा, शेर, पुल, रोटी, दूध, लौकी, आँख, तृण, सुर **(ङ)** क्ष–क्षण क्षत्रिय, त्र–त्रिशूल त्रिनेत्र, ज्ञ–ज्ञानी अज्ञान, श्र–श्रमिक श्रोता **(च)** अ ई ई ई ई आ अ आ **(छ)** 1. खटमल, 2. घड़ी, 3. जहाज, 4. तीर, 5. दवात, 6. मछली, 7. रथ, 8. शलजम, 9. हाथी **(ज)** पंखा, चाँद, मुँह, कंघा, कंगन, आँख, बंदर, ऊँट, माँद, संतरा, पंखा, जंगल।

3. शब्द और वाक्य

(क) 1. वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं। 2. अर्थ के आधार पर शब्दों के दो भेद होते हैं–(1) सार्थक शब्द (2) निरर्थक शब्द 3. जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता परंतु बातचीत में उन्हें सार्थक शब्दों के साथ, 'के बजाय', 'के अतिरिक्त' अथता 'वगैरह' के अर्थ में प्रयोग करते हैं, उन्हें निरर्थक शब्द कहते हैं। 4. सार्थक शब्दों का वह क्रमबद्ध समूह जिससे पूरी बात समझ में आ जाए, वाक्य कहलाता है। **(ख)** 1. दो 2. शब्द 3. निरर्थक 4. वाक्य **(ग)** 1. ब 2. स 3. स **(घ) सार्थक शब्द–**

चाय, कलम, आटा, आम, खाना, पानी, चिड़िया, फल, **निरर्थक शब्द**- वाना, वाम, वाय, विड़िया, वाटा, वानी, वलम, वल **(ङ)** 1. माताजी रामायण पढ़ती हैं। 2. पक्षी उड़ रहे हैं। 3. मनीष कहानी लिख रहा है। 4. वे कबड्डी खेल रहे हैं। **(च)** हिरन, नमक, किताब, गाय, अनपढ़, बगीचा, रानी, घर, बचपन, घोड़ा।

4. संज्ञा

(क) 1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। 2. संज्ञा के मुख्यत: तीन भेद होते हैं-1 व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा 3. भाववाचक संज्ञा। **जातिवाचक संज्ञा**-जिस शब्द से किसी प्राणी, वस्तु या स्थान की संपूर्ण जाति का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। **व्यक्तिवाचक संज्ञा**-जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। **(ख)** 1. बिल्ली 2. मिठास 3. सूरज 4. मोर **(ग)** 1. स 2. स 3. ब **(घ)** स्वयं करें **(ङ)** लौकी, चीता, राजा, ताल, ताली, मकान **(च)** 1. हाँ 2. हाँ 3. हाँ 4. हाँ 5. हाँ **(छ)** 1. पुजारी, घंटा 2. शाहजहाँ, ताजमहल 3. हिरन, जंगल 4. राम, बाजार।

5. वचन

(क) 1. शब्द के जिस रूप से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध हो, उसे वचन कहते हैं। 2. **एकवचन**-जिस शब्द से किसी वस्तु अथवा प्राणी के संख्या में एक होने का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे- गुड़िया, तोता, पत्ता, पुस्तक आदि। 3. **बहुवचन**-जिस शब्द से किसी वस्तु अथवा प्राणी के संख्या में एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे- गुड़ियाँ, तोते, पत्ते, पुस्तकें आदि। **(ख)** 1. चूहे 2. तोता 3. पौधा 4. तिनके **(ग)** 1. अ 2. ब **(घ)** कौए, संतरा, प्याले, कमरा, बकरे, थालियाँ, नारियाँ, टोपियाँ, कुरसी, साड़ियाँ, रोटियाँ, बकरी, बहुएँ, नौकाएँ **(ङ)** स्वयं करें **(च)** **एकवचन**-चेहरा, साड़ी, किताब, जलेबी; **बहुवचन**-चेहरे, साड़ियाँ, किताबें, जलेबियाँ **(छ)** 1. एकवचन 2. बहुवचन 3. एकवचन 4. बहुवचन 5. बहुवचन 6. एकवचन 7. बहुवचन 8. एकवचन।

6. लिंग

(क) 1. व्याकरण में नर अथवा मादा की पहचान कराने वाले शब्दों को लिंग कहते हैं। 2. **पुल्लिंग**-जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं। 3. **स्त्रीलिंग**-जो शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं। **(ख)** 1. रानी 2. चाचीजी 3. दादीजी 4. धोबिन **(ग)** 1. अ 2. अ 3. ब 4. अ **(घ)** 1. माताजी

आ गईं। 2. मुरगी दाना खा रही है। 3. घोड़ी तेज दौड़ती है। 4. नौकरानी सफाई कर रही है। 5. साँपिन बिल में रहती है। **(ङ)** पिता, चाची, छात्र, पकौड़ी, मादा कोयल, मादा खरगोश, ताली, बैल, घंटी, पहाड़ी **(च)** हाथी (पुल्लिंग), पुरुष (पुल्लिंग), बैल (पुल्लिंग), टमाटर (पुल्लिंग), भिंडी (स्त्रीलिंग), केला (पुल्लिंग), ट्रक (पुल्लिंग), कार (स्त्रीलिंग), सूर्य (पुल्लिंग), ताला (पुल्लिंग), टोपी (स्त्रीलिंग), चाबी (स्त्रीलिंग), बकरी (स्त्रीलिंग), मिर्च (स्त्रीलिंग), सरस्वती (स्त्रीलिंग) **(छ)** शेरनी, चिड़िया; आदमी, चिड़ा, शेर **(ज) सदैव पुल्लिंग**– मच्छर, खरगोश, कौआ, भेड़िया, **सदैव स्त्रीलिंग**–चील, तितली, मछली, कोयल।

7. सर्वनाम

(क) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। 2. सर्वनाम के छह भेद होते हैं–(i) पुरुषवाचक सर्वनाम (ii) निश्चयवाचक सर्वनाम (iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (iv) संबंधवाचक सर्वनाम (v) प्रश्नवाचक सर्वनाम (vi) निजवाचक सर्वनाम। 3. 'तू, तुम, मुझे, आप' आदि सर्वनाम का प्रयोग जिससे बात की जाती है उसके लिए किया जाता है। 4. कौन और क्या सर्वनामों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है। **(ख)** 1. मैं 2. वह 3. मैं 4. आप **(ग)** 1. अ 2. ब 3. अ **(घ)** 1. आप यहाँ बैठिए। 2. बाहर कौन है? 3. तुम घर जाओ। 4. थैले में क्या है? **(ङ)** 1. मैं, हम 2. आप, आप लोग 3. तुम 4. आप, तुम **(च)** मैं मैं तुम हमें तुम अपना **(छ)** 1. कौन 2. क्या 3. कुछ 4. कौन

8. विशेषण

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। 2. विशेषण शब्द जिन शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेष्य कहते हैं। 3. संज्ञा या सर्वनाम की संख्या बताने वाले शब्द संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। 4. संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा या परिमाण का बोध कराने वाले शब्द परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं। **(ख)** 1. लाल 2. चालाक 3. दस 4. काला **(ग)** 1.स 2. अ **(घ)** 1. पानी 2. कोट 3. लड़का 4. फल 5. इमारत **(ङ)** गर्म चाय ठंडी आइसक्रीम लाल फूल मोटा लड़का **(च)** 1. काला 2. पाँच 3. सफेद 4. दस 5. हरा **(छ)** 1. नया कोट 2. पुराने जूते 3. गूँगा आदमी 4. काली बकरी 5. प्यासा कौआ 6. एक दर्जन केले **(ज)** 1. बिल्ली–भूरी 2. गोल–गप्पे–चटपटे 3. गुड़िया–सुंदर 4. आम–मीठा।

9. क्रिया

(क) 1. जिन शब्दों से किसी कार्य का करना या होना प्रकट हो, उन्हें क्रिया कहते हैं। 2. क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। **(ख)** 1. बैठा 2. उड़ाता 3. खेलता 4. उड़ **(ग)** 1. ब 2. ब 3. स **(घ)** 1. गा रहा है। 2. आओ। 3. खड़ा है। 4. गा रही है। 5. पढ़ता है। 6. है, था। **(ङ)** खेलते हैं। उड़ाता है। भौंकता है। बाँटता है। सींचता है। **(च)** तुम स्कूल जा रहे हो। वह स्कूल जा रहा है। हम स्कूल जा रहे हैं। वे स्कूल जा रहे हैं।

10. शब्द-भंडार

(क) 1. परस्पर समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। 2. जो शब्द परस्पर उलटा (विपरीत) अर्थ प्रकट करें, उन्हें विलोम शब्द कहते हैं। 3. वह एक शब्द जो वाक्यांश के अर्थ को पूर्णतया अभिव्यक्त करता है, 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' कहलाता है। 4. पर्यायवाची शब्द का अन्य नाम समानार्थी शब्द है। **(ख)** 1. पानी 2. समीर 3. घृणा 4. उदय 5. निडर **(ग)** 1. ब 2. अ 3. ब 4. ब 5. ब **(घ)** दुर्गंध, अनुचित, नकली, अशुद्ध, अधिक, विषाद, पुराना, हानि **(ङ)** वीर-बहादुर, हमेशा-सदा, पास-निकट, उदास-दुखी, दोस्त-सखा **(च)** कच्चा पका; अँधेरा उजाला; काला सफेद; साफ मैला; गरम ठंडा; बुझना जलना **(छ)** 1. मांसाहारी 2. बधिर 3. मितभाषी 4. चुगलखोर 5. सत्यवादी 6. दैनिक **(ज)** कौआ, काक, काग; पहाड़, पर्वत, नग; आँख, नेत्र, नयन; फूल, पुष्प, सुमन।

हिंदी व्याकरण भारती 3

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. भाषा के द्वारा ही हम अपनी बात दूसरों को समझा सकते हैं और दूसरों की बात समझ सकते हैं। भाषा के दो रूप हैं-मौखिक व लिखित। 2. भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। 3. भाषाओं को लिखने के लिए जो चिह्न निश्चित किए गए हैं, उन्हें लिपि कहते हैं। उर्दू भाषा की लिपि फारसी है। 4. व्याकरण वह शास्त्र है, जो हमें किसी भाषा की शुद्धता के नियमों की जानकारी देता है। **(ख)** 1. भाषा 2. भाषा 3. बांग्ला 4. बोली **(ग)** 1. ब 2. ब 3. अ **(घ)** 1. उत्तर प्रदेश/हरियाणा 2. कर्नाटक 3. महाराष्ट्र 4. तमिलनाडु 5. गुजरात 6. कश्मीर 7. पश्चिम बंगाल 8. पंजाब 9. केरल 10. आंध्र प्रदेश **(ङ)** 1. मेरी कमीज सिल गई है। 2. बच्चे को सेब काट कर

खिलाओ 3. क्या कमीज के बटन टूट गए हैं? 4. राम और सीता वन गए। 5. परमात्मा की पूजा करो। **(च)** लिखित, लिखित, मौखिक, मौखिक **(छ)** 1. (द) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) **(ज)** 1. फ्रेंच 2. जर्मन 3. स्पेनिश 4. चीनी।

2. वर्ण और वर्णमाला

(क) 1. वह छोटी से छोटी ध्वनि जिसके और टुकड़े न हो सकें, उसे वर्ण कहते हैं। 2. स्वर ऐसे वर्ण होते हैं जिन्हें बिना किसी अन्य ध्वनि की सहायता के बोला जा सकता है। इनका उच्चारण अलग से किया जा सकता है। 3. जो वर्ण स्वरों की सहायता से बोले जाते हैं, उन्हें व्यंजन कहते हैं। 4. 'अं' तथा 'अः' स्वर तथा व्यंजन के बीच की स्थिति वाले वर्ण हैं। इन्हें अयोगवाह कहा जाता है। 5.जब हम दो व्यंजनों को मिलाकर उनका उच्चारण एक साथ करते हैं तो उन्हें संयुक्ताक्षर कहते हैं। 6. व्यंजन के साथ मिलाकर लिखे गए स्वर के चिह्न को ही मात्रा कहते हैं। **(ख)** 1. अनुनासिक 2. श्र 3. अक्षर 4. स्वर **(ग)** 1. ब 2. ब 3. अ 4. स **(घ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ **(ङ)** 1. अनुस्वार 2. अनुनासिक 3. अनुनासिक 4. अनुस्वार 5. अनुस्वार 6. अनुनासिक **(च)** 1. च्+अ+र्+अ+ख्+आ 2. ल्+ओ+ट्+आ 3. व्+आ+ल्+ई 4. इ+ध्+अ+र्+अ 5. ब्+अ+र्+अ+ग्+अ+द्+अ 6. च्+आ+च्+आ **(छ)** चाँद, आँख **(ज)** 1. गिलहरी 2. विद्यालय 3. तलवार 4. बारिश 5. अधिकार 6. मछली **(झ)** मा मि मी मु मू मृ मे मै मो मौ मं मँ मः माँ **(ञ)** त्मा, त्, म्+आ, ज्जा, ज्, ज्+आ।

3. शब्द एवं वाक्य

(क) 1. दो या दो से अधिक वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं। 2. शब्द के भेद चार आधारों पर किए जाते हैं-(i) अर्थ के आधार पर (ii) प्रयोग के आधार पर (iii) उत्पत्ति के आधार पर (iv) रचना के आधार पर 3. ऐसे शब्द जिनका कोई अर्थ नहीं होता, परंतु बातचीत में अन्य शब्दों के साथ 'आदि, वगैरह' के अर्थ में प्रयोग में लाए जाते हैं, उन्हें निरर्थक शब्द कहते हैं। जैसे-चाय-वाय और रोटी-वोटी में वाय और वोटी 4. सार्थक शब्दों का क्रमबद्ध समूह जिससे पूरी बात समझ में आ जाए, वाक्य कहलाता है। 5. **विधेय**-वाक्य में उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं; जैसे- 'पक्षी उड़ रहे हैं। इस वाक्य में 'उड़ रहे हैं' विधेय है। **(ख)** 1. दो 2. दो 3. शब्द **(ग)** 1. ब 2. स 3. अ **(घ)** 1. घोड़ा तेज दौड़ता है। 2. शुभ पुस्तक पढ़ता है। 3. भूमि कार चला रही है। 4. बंदर पेड़ पर है। 5. अपार गाना गा रहा

है। **(ङ) सार्थक शब्द**–पानी, फूल, चाय, बालक, गेट, कागज, कपड़ा, पुस्तक, कप। **निरर्थक शब्द**–वानी, वूल, वाय, वालक, वेट, वागज, वपड़ा, वुस्तक, वप **(च)** कमल, बालक, कपड़ा, कागज, बरतन, गुलाब **(छ)** 1. **उद्देश्य**–होली, **विधेय**–रंगों का त्योहार है। 2. **उद्देश्य**–मदारी, **विधेय**–तमाशा दिखा रहा है। 3. **उद्देश्य**–मोर, **विधेय**–नाच रहा है। 4. **उद्देश्य**–शेर, **विधेय**–दहाड़ रहा है। 5. **उद्देश्य**–घोड़ा, **विधेय**–दौड़ रहा है। 6. **उद्देश्य**–राम, **विधेय**–पतंग उड़ा रहा है।

4. संज्ञा

(क) 1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव अथवा दशा के नाम को संज्ञा कहते हैं। 2. जिन शब्दों से किसी प्राणी अथवा पदार्थ की दशा, अवस्था या गुण आदि का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–सुख, क्रोध, बचपन, मोटापा, ईमानदारी, कड़वाहट आदि। 3. जो शब्द एक ही प्रकार के समूह या जाति के सभी प्राणियों व वस्तुओं आदि का बोध कराते हैं, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे– स्त्री, लड़का, नदी, वृक्ष, पर्वत आदि। 4. जिस संज्ञा शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान का बोध होता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। 5. जातिवाचक संज्ञा को विशेष नाम देने पर वह व्यक्तिवाचक संज्ञा बन जाती है; जैसे–घोड़ा (जातिवाचक)–चेतक (व्यक्तिवाचक), पुरुष (जातिवाचक) –राम (व्यक्तिवाचक) **(ख)** 1. पक्षी 2. मिठास 3. श्री नरेंद्र मोदी 4. श्री प्रणव मुखर्जी **(ग)** 1. अ 2. ब 3. स **(घ)** 1. भाववाचक 2. जातिवाचक 3. व्यक्तिवाचक 4. भाववाचक 5. जातिवाचक 6. व्यक्तिवाचक **(ङ)** 1. वीरता, सैनिकों 2. राम, बाजार 3. सरिता, लंबाई 4. हरिद्वार, गंगा।

5. वचन

(क) 1. शब्द का वह रूप जो उसका संख्या में एक या अनेक होना बताए, उसे वचन कहते हैं। 2. जो शब्द किसी वस्तु, प्राणी या स्थान के संख्या में एक होने का बोध कराएँ, उन्हें एकवचन कहते हैं। 3. जो शब्द किसी वस्तु, प्राणी या स्थान के संख्या में एक से अधिक होने का बोध कराएँ, उन्हें बहुवचन कहते हैं। 4. हस्ताक्षर, समाचार, आँसू, बाल। **(ख)** 1. घोड़े 2. मछली 3. क्यारियाँ 4. कपड़ा 5. मक्खियाँ **(ग)** 1. ब 2. स 3. अ **(घ)** 1. खिलौने 2. लड़कियाँ 3. वधुएँ 4. खिड़कियाँ 5. घड़े 6. चिड़ियाँ **(ङ)** 1. मुझे हरे कपड़े अच्छे लगते हैं। 2. बालिका पुस्तक पढ़ रही है। 3. लड़के हँस रहे हैं। 4. पीपल के पेड़ कट गए।

(च) 1. एकवचन 2. एकवचन 3. एकवचन 4. एकवचन
बहुवचन बहुवचन बहुवचन बहुवचन

6. लिंग

(क) 1. शब्द के जिस रूप से उसके स्त्री या पुरुष होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं। 2. जिस संज्ञा शब्द से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं; जैसे-लड़का, मोर, सेब, घंटा 3. जिस संज्ञा शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे- लड़की, मोरनी, लीची, घंटी। **(ख)** 1. बंदर 2. गुड़िया 3. नौकरानी 4. माली 5. हाथी **(ग)** 1. अ 2. अ 3. अ **(घ)** 1. पुल्लिंग 2. पुल्लिंग 3. पुल्लिंग 4. स्त्रीलिंग 5. स्त्रीलिंग 6. स्त्रीलिंग 7. स्त्रीलिंग 8. स्त्रीलिंग 9. पुल्लिंग 10 स्त्रीलिंग **(ङ)** 1. धोबी कपड़े धो रहा है। 2. पंडिताइन ने कमरे की सफाई की। 3. शिक्षिका ने मिठाई बाँटी। **(च)** 1. भीलनी 2. पंडिताइन 3. गुड्डा 4. अध्यापक 5. शिष्य 6. देवी 7. गाय 8. नाइन 9. चोर 10. वृद्ध **(छ)** स्त्रीलिंग पुल्लिंग स्त्रीलिंग स्त्रीलिंग पुल्लिंग स्त्रीलिंग

7. सर्वनाम

(क) 1. जो शब्द संज्ञा (नाम) के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। कुछ प्रमुख सर्वनाम हैं-मैं, हम, तू, तुम, आप, वह, ये, कोई, कौन आदि। 2. सर्वनाम के 6 भेद होते हैं- (i) पुरुषवाचक सर्वनाम, (ii) निश्चयवाचक सर्वनाम (iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (iv) प्रश्नवाचक सर्वनाम (v) संबंधवाचक (vi) निजवाचक। 3. जो सर्वनाम शब्द वाक्य में आए दूसरे सर्वनाम शब्द से संबंध रखते हैं, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। 4. बोलने वाले, सुनने वाले तथा किसी अन्य व्यक्ति के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे-मैं, तुम, वह, मैंने, तुमने, उसने आदि। 5. जो सर्वनाम शब्द किसी निकट अथवा दूर की वस्तु या व्यक्ति का निश्चित बोध कराते हैं, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे-यह, ये, वह, वे आदि। **(ख)** 1. वे 2. हम 3. किसकी 4. मुझे **(ग)** 1. स 2. अ 3. अ **(घ)** 1. आप 2. हम 3. कोई 4. वह 5. कौन **(ङ)** 1. रिया प्रतियोगिता में प्रथम आई। **उसे** सबने शाबाशी दी। 2. मैदान में कुछ खिलाड़ी हैं। **वे** दौड़ रहे हैं। 3. चाची जी रसोईघर में हैं। **वे** भोजन पका रही हैं। 4. गाय घर आई। **वह** घास खाने लगी। 5. राधा ने **अपनी** कमीज पहनी। **(च)** श्रीकृष्ण देवकी और वसुदेव के पुत्र थे। **उनके** मामा कंस ने **उनके** आठ भाई-बहनों को मार दिया था और यह भी

कहा था कि देवकी की किसी भी संतान को जीवित न रहने देंगे। जब **वे** पैदा हुए तो **उनके** पिता **उन्हें** यशोदा के पास छोड़ आए।

8. विशेषण

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं। 2. जिन शब्दों की विशेषता बताई जाए, वे विशेष्य कहलाते हैं। **(ख)** 1. बड़ा 2. लंबा 3. मधुर **(ग)** 1. स 2. स **(घ) विशेषण**–घना, गहरी, हरी–हरी, दो, काली, ठंडा, भूरी, टूटे। **विशेष्य**–जंगल, नदी, घास, बकरियाँ, बकरी, पानी, बकरी, पुल **(ङ)** 1. दयालु 2. मासिक 3. वार्षिक 4. प्यासा 5. भूखा 6. रोगी **(च)** 1. लाल 2. पका 3. बूढ़ी 4.सुंदर 5. गरम 6. भारी ।

9. क्रिया

(क) 1. जिन शब्दों से किसी कार्य का करना या होना पाया जाता है, उन्हें क्रिया कहते हैं। 2. कार्य करने वाले को कर्ता कहते हैं। 3. कर्ता द्वारा की गई क्रिया का प्रभाव जिस पर पड़ता है, उसे कर्म कहते हैं। 4. वाक्य में जिन कर्ताओं के साथ कर्म का प्रयोग होता है, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं। 5. जिस क्रिया का कोई कर्म ना हो, वह अकर्मक क्रिया कहलाती है। **(ख)** 1. कूद रही है 2. गा रहा है 3. दौड़ रही है 4. चल रहा है **(ग)** 1. स 2. ब **(घ) क्रिया शब्द**– उछला, गरजा, बह गया, आया, लिखती है, चली, कूद गई, उड़ गई; **कर्ता**–बंदर, बादल, पानी, अमन, गरिमा, नाव, चुहिया, चिड़िया **(ङ)** 1. अकर्मक 2. अकर्मक 3. सकर्मक 4. सकर्मक 5. अकर्मक।

10. शब्द-भंडार

(क) 1. एक–दूसरे का विपरीत अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को विलोम शब्द कहते हैं। 2. समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहते हैं। 3. वाक्यांश को एक ही शब्द में सीमित करने वाला शब्द 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' कहलाता है। **(ख)** 1. सरल 2. हय 3. सर्वज्ञ 4. प्रेम **(ग)** 1. अ 2. अ 3. स **(घ)** दुर्जन, अनुत्तीर्ण, अस्त, बाहर, मूर्ख, अस्वस्थ, काला, अनुचित, अधर्म, शीत, छोटा, रहस्य **(ङ)** 1. निरामिष 2. निर्भय 3. अपठ्य 4. अज्ञ 5. पठ्य 6. दुराचारी **(च)** गणेश–गजानन, गंगा–सुरसरि, घोड़ा–वाजि, सरस्वती–गिरा, बंदर–कपि, कोयल–श्यामा, कपड़ा–पट, बादल–पयोद **(छ)** 1. अनल, पावक, ज्वाला, 2. तनय, बेटा, लाल, 3. भागीरथी, सुरसरि, मंदाकिनी, 4. दुनिया, विश्व, जग, 5. सर, सरोवर, ताल, 6. वस्त्र, पट, चीर, **(ज)** विद्यार्थी, लेखक, शिक्षक, विद्यालय, डाकिया,

धोबी, हलवाई, **(झ)** अगला पिछला, पश्चिम पूरब, बाएँ दाएँ, पराया अपना, सूखा गीला, लंबा ठिगना, लाभ हानि, सच झूठ, तेज धीरे, रोना हँसना।

11. मुहावरे

(क) 1. ऐसा वाक्यांश जो साधारण अर्थ न देकर कोई विशेष अर्थ दे, मुहावरा कहलाता है। 2. भाषा को रोचक व प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। **(ख)** 1. ईद का चाँद 2. नौ दो ग्यारह 3. अँगूठा दिखाना 4. दाँतों तले उँगली दबाना **(ग)** 1. ब 2. अ 3. ब **(घ)** 1. ब 2. अ 3. द 4. स **(ङ)** स्वयं करें।

हिंदी व्याकरण भारती 4

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. भाषा अपने मन के विचारों को दूसरों के सामने प्रकट करने और उनके विचारों को समझने का साधन है। 2. किसी सीमित क्षेत्र में बोलचाल की भाषा को बोली कहते हैं। दो बोलियों के नाम हैं–अवधी, बुंदेली 3. जब हम कुछ बोलते हैं तो हमारे मुँह से ध्वनियाँ निकलती हैं। इन ध्वनियों को लिखने के लिए कुछ चिह्न निश्चित कर लिए गए हैं। इन चिह्नों को वर्ण कहते हैं। इन्हीं वर्णों को लिखने के ढंग को लिपि कहते हैं। उर्दू भाषा की लिपि फारसी है। 4. व्याकरण वह शास्त्र है, जो हमें भाषा को शुद्ध रूप में बोलना, पढ़ना और लिखना सिखाता है। 5. जब हम बोलकर अपनी बात कहते हैं और दूसरे सुनकर उसे समझते हैं, तो उसे मौखिक भाषा कहते हैं। भाषण देना, कहानी सुनाना, बातचीत आदि मौखिक भाषा के उदाहरण हैं। **(ख)** 1. लिखित 2. हिंदी 3. भाषा 4. रोमन **(ग)** 1. ब 2. अ 3. ब **(घ)** अंग्रेजी, रूसी, फ्रेंच, हिंदी, जापानी, जर्मन, चीनी, नेपाली **(ङ)** 1. मलयालम 2. उर्दू 3. पंजाबी 4. हिंदी 5. देवनागरी 6. गुरुमुखी **(छ) भारतीय भाषाएँ**–उर्दू, गुजराती, तमिल, तेलुगु, हिंदी, मलयालम, **विदेशी भाषाएँ**–जापानी, चीनी, रूसी, अंग्रेजी **(ज)** 1. मौखिक 2. लिखित 3. मौखिक 4. मौखिक 5. लिखित।

2. वर्ण-विचार

(क) 1. वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है। 2. वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं। हिंदी की वर्णमाला इस प्रकार है– **स्वर**–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, **अयोगवाह**–अं, अः, **व्यंजन**–क, ख, ग, घ, ङ; च, छ, ज, झ, ञ; ट, ठ, ड, ढ, ण; त, थ, द, ध, न; प, फ, ब, भ, म; य, र, ल, व, श, ष, स, ह। **अतिरिक्त व्यंजन**–ड़, ढ़, **संयुक्त व्यंजन**–क्ष, त्र, ज्ञ, श्र; 3. जिन वर्णों को बोलते

समय वायु स्वतंत्र रूप से मुख से बाहर निकलती है, उन्हें स्वर कहते हैं। इनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती अर्थात् इनका उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता है। **व्यंजन**–जिन वर्णों को बोलते समय वायु मुख के भीतर किसी भाग से टकराकर बाहर निकलती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। बोलने के लिए स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है। हिंदी वर्णमाला में 33 व्यंजन होते हैं। 4. दो व्यंजनों के मेल से बने व्यंजनों को संयुक्त व्यंजन कहते हैं। हिंदी में क्ष, त्र, ज्ञ, श्र चार संयुक्त व्यंजन हैं। क्ष=क्+ष–अक्षर, यक्ष, त्र=त्+र–मित्र, यत्र, ज्ञ=ज्+ञ–अज्ञात, यज्ञ, श्र=श्+र–श्रीमान, मिश्री, दो भिन्न व्यंजन, जिनमें पहला व्यंजन स्वर रहित व दूसरा स्वर सहित होता है और जिनका उच्चारण एक साथ किया जाता है, संयुक्ताक्षर कहलाते हैं; जैसे– क्+य = क्यारी। स्+व = स्वर। ट्+ठ = ट्ठ/ट्ठ – लट्ठ / लट्ठ। ष्+ य = ष्य – मनुष्य। त्+थ = त्थ – पत्थर। स्+त = स्त – अस्त। द्+ध = द्ध / द्ध – बुद्धू / बुद्धू। ह्+न = ह्न / ह्न – चिह्न / चिह्न **(ख)** 1. स्वर 2. वर्ण 3. संयुक्त व्यंजन **(ग)** 1. स 2. अ 3. स **(घ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗ **(ङ)** चाँद, पतंग, पंख, आँख, साँप, **(च)** ल–अंत:स्थ, ह–ऊष्म, म–प वर्ग, ञ–च वर्ग, ग–क वर्ग, द–त वर्ग ड–ट वर्ग **(छ) क्ष**–क्षेत्र क्षमा क्षय, **त्र**–त्रिकोण त्रेता त्रिनेत्र, **ज्ञ**–ज्ञान अज्ञात ज्ञानी, **श्र**–श्रमिक श्रोता श्रवण।

3. शब्द और वाक्य

(क) 1. दो या दो से अधिक वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं। 2. शब्दों का वर्गीकरण निम्नलिखित चार आधारों पर करते हैं–(i) अर्थ के आधार पर (ii) बनावट (रचना) के आधार पर (iii) उत्पत्ति के आधार पर (iv) प्रयोग के आधार पर 3. रचना के आधार पर शब्दों के तीन भेद होते हैं– **(क)** रूढ़ शब्द **(ख)** यौगिक शब्द **(ग)** योगरूढ़ शब्द। **(क) रूढ़ शब्द**–जो शब्द किन्हीं अन्य शब्दों के योग से न बने हों तथा जिनके सार्थक खंड न किए जा सकें, रूढ़ शब्द कहलाते हैं; जैसे–गाय, घोड़ा, फल, पुस्तक, मेज, सूर्य, पृथ्वी आदि। **(ख) यौगिक शब्द**– यौगिक का अर्थ है– 'जुड़ा हुआ'। किसी रूढ़ शब्द में कोई अन्य सार्थक शब्द या शब्द–खंड जुड़ जाने पर बनने वाला शब्द यौगिक शब्द कहलाता है। जैसे– सेना+ पति = सेनापति, रसोई+घर = रसोईघर, दीप+अवली = दीपावली, देश+भक्ति = देशभक्ति **(ग) योगरूढ़ शब्द**– जो यौगिक शब्द किसी विशेष अर्थ में प्रसिद्ध (रूढ़) हो जाते हैं अथवा वस्तु या संदर्भ के लिए प्रसिद्ध हो गए हैं, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं;

जैसे- पंकज (कमल), निशाचर (राक्षस), चारपाई (खाट) आदि। 4. उत्पत्ति के आधार पर शब्द के चार भेद होते हैं-**(क)** तत्सम शब्द **(ख)** तद्भव शब्द **(ग)** देशज शब्द **(घ)** विदेशी या आगत शब्द। **(क) तत्सम शब्द**- संस्कृत भाषा के वे शब्द, जो हिंदी भाषा में ज्यों-के-त्यों प्रयोग किए जाते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं; जैसे- दुग्ध, काक, घृत, अग्नि, रात्रि आदि। **(ख) तद्भव शब्द**- संस्कृत भाषा के वे शब्द, जो कुछ बदले हुए रूप में हिंदी भाषा में प्रयोग किए जाते हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे- दूध, कौआ, घी, आग, रात आदि। **(ग) देशज शब्द**- जो शब्द देश की विभिन्न भाषाओं से परिस्थितिवश हिंदी में अपना लिए गए हैं, देशज या देशी शब्द कहलाते हैं। जैसे-फावड़ा, टाट, मिर्च, बेटा, बेटी, घोंसला, पत्थर, आटा, रोटी, धोती, पंखा आदि। **(घ)** विदेशी शब्द- जो शब्द विदेशी भाषाओं से हिंदी में आ गए हैं, उन्हें आगत या विदेशी शब्द कहते हैं; जैसे स्कूल, कोट, पैन, किताब, कमरा, पुलिस, कैंची, चाय, औलाद आदि। 5. **(क) विकारी शब्द**- जिन शब्दों का रूप लिंग, वचन, कारक के अनुसार बदल जाता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। ये चार प्रकार के होते हैं-**(अ)** संज्ञा **(ब)** सर्वनाम **(स)** विशेषण **(द)** क्रिया। **(ख) अविकारी शब्द**- जिन शब्दों का रूप लिंग, वचन, कारक के अनुसार नहीं बदलता अर्थात् हमेशा एक जैसा रहता है, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। ये भी संख्या में चार हैं-**(अ)** क्रियाविशेषण **(ब)** संबंधबोधक **(स)** समुच्चयबोधक **(द)** विस्मयादिबोधक। 6. दो या दो से अधिक सार्थक शब्दों के ऐसे समूह को वाक्य कहते हैं जिसका अर्थ पूर्णतया स्पष्ट हो; जैसे- शुभ पतंग उड़ा रहा है। भूमि पढ़ रही है। खरगोश दौड़ रहा है। उपर्युक्त शब्द-समूहों को पढ़ने पर उनका अर्थ पूर्णतया स्पष्ट हो रहा है। अत: ये वाक्य हैं। वाक्य के दो अंग होते हैं-1. उद्देश्य 2. विधेय। **(ख)** 1. शब्द 2. चार 3. सार्थक 4. वाक्य 5. उद्देश्य **(ग)** 1. अ 2. ब 3. अ 4. अ 5. ब **(घ)** 1. **उद्देश्य**-भालू, **विधेय**-नाच रहा है। 2. **उद्देश्य**-राजू, **विधेय**-ढोल बजा रहा है। 3. **उद्देश्य**-शिल्पा, **विधेय**-शर्बत बना रही है। 4. **उद्देश्य**-शैलजा, **विधेय**-कंप्यूटर चला रही है। 5. **उद्देश्य**-सोनल, **विधेय**-खाना खा रही है। **(ङ)** ह्+इ+र्+अ+न्+अ, प्+औ+ध्+आ, फ्+ऊ+ल्+अ, अ+म्+अ+र्+ऊ+द्+अ, अं+ग्+र्+ए+ज्+ई, क्+ऋ+प्+आ+ण्+अ **(च)** 1. रात को आकाश में तारे चमकते हैं। 2. सैनिक देश की रक्षा करते हैं। 3. गरीबों की मदद करनी चाहिए। 4. हम खेलने जाते हैं। **(छ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(ज)** 1. वह घर जा रहा है।

2. मैं बाजार गया था। 3. अमरूद मीठे हैं। 4. उसने पिचकारी से रंग छोड़ा। 5. मैंने उसे चॉकलेट दी। **(झ) रूढ़ शब्द**–घोड़ा, घर, रोटी, रथ **यौगिक शब्द**–रसोईघर, सेनापति, दीपावली, देशभक्ति **योगरूढ़ शब्द**–पंकज, निशाचर, चारपाई, जलज **देशज शब्द**–फावड़ा, टाट, बेटा, आटा **विदेशी शब्द**–बस, पैन, कप, कोट। **(ञ) सार्थक**–बंदर, कोयला, बरफी, महल, **निरर्थक**– वंदर, वोयला, सरफी, वहल,

4. शब्द–भंडार

(क) 1. समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्द समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। 2. एक–दूसरे का उल्टा अर्थ प्रकट करने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं। 3. ऐसे शब्दों के प्रयोग से भाषा में संक्षिप्तता आती है तथा भाषा सुंदर और प्रवाहपूर्ण हो जाती है, ऐसे शब्दों को ही 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' कहा जाता है। **(ख)** 1. कवि 2. मासिक 3. दयालु **(ग)** 1. स 2. द 3. अ **(घ)** धूप–छाया, हार–जीत, खट्टा–मीठा, रंक–राजा, प्राचीन–नवीन, पवित्र–अपवित्र **(ङ) हवा**–वायु, समीर। **आँख**–नेत्र, लोचन। **पुत्र**–सुत, तनय। **पृथ्वी**–धरती, भूमि। **सूर्य**–दिनकर, रवि। **आग**–अग्नि, अनल। **गुरु**–शिक्षक, अध्यापक। **हाथी**–गज, हस्ती। **पर्वत**–गिरि, नग। **शेर**–सिंह, केसरी। **(च)** 1. सहपाठी 2. शाकाहारी 3. वार्षिक 4. दयालु 5. दर्शनीय 6. अदृश्य 7. गोपनीय।

5. संज्ञा

(क) 1. व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। 2. जिन संज्ञा शब्दों से एक ही प्रकार की सभी वस्तुओं, स्थानों या प्राणियों का बोध हो, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहा जाता है; जैसे– लड़का, स्त्री, पुरुष, पुस्तक, मकान, गाँव, शहर, कुत्ता, मेज, कुर्सी आदि। 3. जिन शब्दों से किसी प्राणी अथवा पदार्थ की दशा, अवस्था या गुण आदि का बोध हो, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे– सुख, दुःख, क्रोध, ईमानदारी, बचपन, जवानी, मिठास आदि। 4. जिस शब्द से किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु या स्थान के गुण–दोष, दशा आदि का बोध हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। **(ख)** 1. निर्धनता 2. मिठास 3. बुढ़ापा 4. बचपन 5. सुंदरता **(ग)** 1. स 2. अ 3. अ **(घ) व्यक्तिवाचक**– रामायण, गुरु ग्रंथ साहिब, सूर्य; **जातिवाचक**– दिल्ली, गाय, आदमी, पशु, चिड़ियाघर; **भाववाचक**– शैशव, दया, दासता, सज्जनता, **(ङ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(च)** 1. **(द)** 2. **(य)** 3. **(स)** 4. **(ब)** 5. अ **(छ)** 1. मित्रता 2. सफलता 3. उड़ान 4. देवत्व 5. स्वत्व 6. ऊँचा 7. सजावट

8. खटाई 9. प्रभुता 10. सजावट **(ज)** 1. **संज्ञा**–आगरा (व्यक्तिवाचक), पेठा (जातिवाचक) 2. **संज्ञा**–भारत (व्यक्तिवाचक), देश (जातिवाचक) 3. **संज्ञा**–कक्षा (समूहवाचक), बच्चे (जातिवाचक) 4. **संज्ञा**–दूध (पदार्थवाचक), मक्खन (पदार्थवाचक) 5. **संज्ञा**–कक्षा (समूहवाचक), अध्यापक (जातिवाचक)।

6. लिंग

(क) 1. शब्द के जिस रूप से स्त्री या पुरुष जाति का पता चले, उसे लिंग कहते हैं। 2. पुरुष या नर जाति का बोध कराने वाले शब्द पुल्लिग कहलाते हैं; जैसे–पिता, दादा, चाची, भाई, राजा, दर्जी, शेर, हाथी आदि। 3. स्त्री या मादा जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं; जैसे–माता, दादी, चाची, बहिन, रानी, दर्जिन, शेरनी, हथिनी आदि। 4. कछुआ, तोता, मगरमच्छ, बिच्छू, गैंडा 5. मछली, चील, तितली, मक्खी, मकड़ी **(ख)** 1. पुल्लिग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिग **(ग)** 1. अ 2. अ 3. अ **(घ)** 1. ऊँटनी 2. मोर 3. नौकरानी 4. नर छिपकली 5. कवयित्री 6. नर मक्खी 7. मादा तोता 8. नर 9. ललाइन 10. भगवान। **(ङ)** 1. श्रीमती प्रधानाचार्या जी को प्रार्थना–पत्र लिखिए। 2. ज्ञानवती स्त्रियाँ सदा आदर पाती हैं। 3. सेठ मंदिर में पूजा करता है। 4. हमारा नौकर सही समय पर आता है। 5. दर्जिन ने कपड़े सिल दिए हैं। **(च) पुल्लिंग**–बैल, मोर **स्त्रीलिंग**–गाय, शेरनी।

7. वचन

(क) 1. शब्द के जिस रूप से उसके एक या एक से अधिक होने का पता चले, उसे वचन कहते हैं। 2. शब्द के जिस रूप से उसके एक होने का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे– पुस्तक, गुब्बारा, माला, केला, मुरगी। 3. शब्द के जिस रूप से उसके एक से अधिक होने का बोध, हो, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे–पुस्तकें, गुब्बारे, मालाएँ, केले, मुरगियाँ, **(ख)** 1. भाषाएँ 2. लड़कियों 3. फूल 4. आम **(ग)** 1. स 2. अ 3. अ **(घ)** 1. हमने चिड़ियाघर में रंग–बिरंगी मछलियाँ देखीं। 2. गोपी की एक गाय काली है। 3. हमारे घर के सभी गमलों में पौधे लगे हैं। 4. तुमने कितने संतरे खाए। 5. मैंने जन्मदिन के लिए टॉफियाँ खरीदी हैं। **(ङ)** 1. लड़की 2. चश्मे 3. संतरा 4. शहनाइयाँ 5. पपीता 6. जीभें 7. किताब 8. सभाएँ 9. मछली 10. तिथियाँ **(च)** 1. (द) 2. (य) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स) 6. (ल) 7. (र) **(छ)** 1. एकवचन 2. एकवचन 3. बहुवचन 4. बहुवचन 5. बहुवचन 6. एकवचन 7. बहुवचन 8. बहुवचन।

8. सर्वनाम

(क) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। 2. सर्वनाम के प्रमुख रूप से छह भेद होते हैं-(i) पुरुषवाचक सर्वनाम (ii) निश्चयवाचक सर्वनाम (iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (iv) संबंधवाचक सर्वनाम (v) प्रश्नवाचक सर्वनाम (vi) निजवाचक सर्वनाम। 3. **पुरुषवाचक सर्वनाम**-जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किसी व्यक्ति के स्थान पर किया जाए, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे- मैं, वह और तुम। पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन उपभेद होते हैं- **(क)** उत्तम पुरुष **(ख)** मध्यम पुरुष **(ग)** अन्य पुरुष। 4. कर्ता द्वारा स्वयं के लिए प्रयोग किए जाने वाले सर्वनाम को निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। 5. निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराने वाले सर्वनाम को निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। **(ख)** 1. किसने 2. कौन 3. किसने 4. किसकी 5. स्वयं **(ग)** 1. ब 2. ब 3. ब **(घ) सर्वनाम**-1. यह 2. क्या 3. कुछ 4. मेरे 5. स्वयं **सर्वनाम के भेद** 1. निश्चयवाचक 2. प्रश्नवाचक 3. अनिश्चयवाचक 4. पुरुषवाचक 5. निजवाचक **(ङ)** 1. तुम क्या पीओगे? 2. उसने खाना खा लिया है। 3. इस बर्तन में चीनी है। 4. मुझे नहीं खेलना है। **(च)** 1. कोई आया है। 2. हम जा रहे हैं। 3. अपना काम खुद करो। 4. दाल में कुछ पड़ा है। 5. वहाँ कौन खड़ा है? 6. तुम बाहर जाओ।

9. विशेषण

(क) 1. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। विशेषण के चार भेद होते हैं-गुणवाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण और संकेतवाचक विशेषण। 2. जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं। 3. **परिमाणवाचक विशेषण**-वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की नाप-तौल का बोध कराते हैं; परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे-मुझे थोड़ा पानी दीजिए।, बहुत समय हो चुका।, उसने तीन मीटर कपड़ा लिया।, यह गाय कम दूध देती है। 4. सर्वनाम तथा सार्वनामिक विशेषणों में अंतर यह है कि सर्वनाम संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होता है, जबकि सार्वनामिक विशेषण संज्ञा से पूर्व आकर उसकी विशेषता बताते हैं। जैसे- **सर्वनाम**- वह मेरा मित्र है। वह बैठ गई। उसे कुछ चाहिए। **सार्वनामिक विशेषण**- वह लड़का मेरा मित्र है। वह लड़की बैठ गई। उसे कुछ कॉपियाँ चाहिए। **(ख)** 1. लंबी 2. अनेक 3. तीन 4. कई **(ग)** 1. ब 2. द 3. ब **(घ) विशेषण**-1. सौ 2. गुलाबी 3. एक किलो

4. कुछ, **विशेष्य**–1. रुपए 2. कमल 3. टमाटर 4. चॉकलेट **(ङ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(च)** 1. नई–गुणवाचक विशेषण 2. चार–संख्यावाचक विशेषण 3. यह–संकेतवाचक विशेषण 4. आधा लीटर–परिमाणवाचक विशेषण 5. कुछ–संख्यावाचक विशेषण **(छ)** काले बादल, काला भालू, बूढ़ा आदमी, पका केला, नई किताब, ठंडा पानी, मीठी खीर, लाल गुलाब।

10. क्रिया

(क) 1. जिन शब्दों से कार्य का करना या होना प्रकट होता है, उन्हें क्रिया कहते हैं। 2. **सकर्मक क्रिया**– जिस क्रिया के करने या होने में कर्म की आवश्यकता पड़ती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे–सीता पत्र लिखती है; मोहन खाना खाता है। 3. क्रिया के जिस रूप से कार्य के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं। 4. **भविष्यत्काल**–क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय का बोध होता है, उसे भविष्यत्काल कहते हैं; जैसे–कल हमारा मैच होगा, मैं तुम्हें हिंदी सिखाऊँगा। **(ख)** 1. उगता 2. नाचने 3. खाया 4. जाएगी 5. उड़ता **(ग)** 1. ट 2. स 3. स **(घ)** 1. सकर्मक 2. सकर्मक 3. अकर्मक 4. अकर्मक 5. सकर्मक **(ङ)** 1. पापा घर में प्रवेश करते हैं। 2. माता जी खाना बनाती हैं। 3. मैं उससे रोज मिलता था। 4. रीना तबला बजाएगी। 5. तुम पिताजी को पत्र लिखोगे। **(च)** 1. भविष्यत्काल 2. वर्तमानकाल 3. भविष्यत्काल 4. भूतकाल 5. भूतकाल।

11. अविकारी शब्द

(क) 1. जो शब्द लिंग, वचन व कारक आदि के आधार पर अपना रूप नहीं बदलते, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। 2. अविकारी शब्द मुख्यत: चार प्रकार के होते हैं– 1. क्रियाविशेषण 2. समुच्चयबोधक 3. संबंधबोधक 4. विस्मयादिबोधक 3. जो शब्द क्रिया की विशेषता बताएँ, उन्हें क्रियाविशेषण कहते हैं। क्रियाविशेषण के मुख्यत: चार भेद होते हैं–**(क)** कालवाचक क्रियाविशेषण **(ख)** स्थानवाचक क्रियाविशेषण **(ग)** परिमाणवाचक क्रियाविशेषण **(घ)** रीतिवाचक क्रियाविशेषण 4. क्रिया के होने का समय बताने वाले शब्दों को कालवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। जैसे–सुबह, शाम, अभी, सदा, आज, कल, प्रतिदिन, अब, कब, सदा, हमेशा आदि। 5. क्रिया की मात्रा या नाप–तौल का बोध कराने वाले शब्दों को परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे– बहुत, कितना, इतना, तनिक, कम, अधिक, थोड़ा, ज्यादा, बिल्कुल आदि। **(ख)** 1. यहाँ 2. प्रतिदिन 3. यहाँ 4. बहुत 5. के ऊपर **(ग)** 1. स 2. ब 3. अ 4. ब

(घ) 1. विनय नीचे बैठा है। 2. तुम शीघ्र घर आओ। 3. बस के आगे मत चलो। 4. वह यहाँ प्रतिदिन आता है। 5. वह ऊपर बैठा है। 6. वह परसों दिल्ली जाएगा। **(ङ) क्रियाविशेषण**–1. सुबह 2. नीचे 3. परसों 4. बहुत 5. तेज **क्रियाविशेषण के भेद**–1. कालवाचक 2. स्थानवाचक 3. कालवाचक 4. परिमाणवाचक 5. रीतिवाचक **(च)** 1. **अव्यय**–क्रियाविशेषण समुच्चयबोधक संबंधबोधक विस्मयादिबोधक।

2. **कालवाचक क्रियाविशेषण**–	सुबह	शाम	प्रतिदिन	कल
3. **स्थानवाचक क्रियाविशेषण**–	यहाँ	वहाँ	ऊपर	नीचे
4. **रीतिवाचक क्रियाविशेषण**–	तेज	मधुर	थोड़ा	बहुत
5. **परिमाणवाचक क्रियाविशेषण**–	इतना	कम	अधिक	बिल्कुल

12. विराम-चिह्न

(क) 1. पढ़ते या लिखते समय विराम को प्रकट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग करते हैं, उन्हें विराम-चिह्न कहा जाता है। 2. **अल्पविराम (,)**– लिखते समय वाक्य में एक शब्द को दूसरे से अलग दिखाने तथा जहाँ थोड़ा रुकना आवश्यक है, वहाँ अल्पविराम, का प्रयोग किया जाता है। जैसे– राम, श्याम और राघव जा रहे हैं; 3. **विस्मयसूचक चिह्न (!)**– हर्ष, आश्चर्य, दु:ख, घृणा आदि के भावों को प्रकट करने के लिए विस्मयसूचक चिह्न (!) का प्रयोग किया जाता है; जैसे– शाबाश! तुम प्रथम आ गए। 4. **प्रश्नसूचक चिह्न (?)**– प्रश्न करते समय वाक्यों के अंत में प्रश्नसूचक चिह्न (?) लगाया जाता है। जैसे– कौन-कौन फिल्म देखने चलेगा? माँ, पिताजी कब आएँगे? 5. **योजक चिह्न (-)**– इस चिह्न का प्रयोग दो शब्दों को जोड़कर लिखने के लिए किया जाता है; जैसे-जल्दी-जल्दी घर चलो। **(ख)** 1. कोष्ठक 2. पूर्ण विराम 3. प्रश्नसूचक 4. विस्मयसूचक चिह्न 5. अल्प विराम 6. योजक **(ग)** 1. अ 2. अ 3. स **(घ)** 1. सोनू, सरिता और विपुल खेलने गए हैं। 2. क्या तुम मंदिर गए थे? 3. रजनी विद्यालय गई है। 4. शाबाश! तुम प्रथम आए हो। **(ङ)** 1. तुम कौन हो? 2. विनय, रामू और रमन जा रहे हैं। 3. हम प्रतिदिन मंदिर जाते हैं। 4. शाबाश! तुम जीत गए।

13. मुहावरे

(क) 1. ऐसे वाक्यांश जिनका प्रयोग उनके सामान्य अर्थ के स्थान पर एक विशेष अर्थ में किया जाता है, मुहावरे कहलाते हैं। 2. मुहावरों के प्रयोग से भाषा सुंदर और स्वाभाविक बन जाती है। **(ख)** 1. जी चुराना 2. आँखों का तारा 3. उन्नीस-बीस का

अंतर 4. चंपत होना **(ग)** 1. स 2. ब 3. ब **(घ)** 1. (द) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) **(ङ)** 1. **अर्थ**-(मतलब न रखना)। **वाक्य प्रयोग**-विवेक ने रमन से आँखें फेर लीं। 2. **अर्थ**-(बुरी तरह हराना)। **वाक्य प्रयोग**-भारत ने क्रिकेट मैच में ऑस्ट्रेलिया के दाँत खट्टे कर दिए। 3. **अर्थ**-(अनपढ़ों में थोड़ा पढ़ा-लिखा)। **वाक्य प्रयोग**-विजय अंधों में काना राजा है। 4. **अर्थ**-(थोड़े में बहुत कुछ)। **वाक्य प्रयोग**-सूरदास का काव्य-संग्रह गागर में सागर है। **(च)** 1. कान भरना 2. पानी-पानी होना 3. टाँग अड़ाना 4. आँखों में धूल झोंकना।

हिंदी व्याकरण भारती 5

1. भाषा, लिपि और व्याकरण

(क) 1. मन के विचारों एवं भावों के आदान-प्रदान का साधन भाषा कहलाती है। भाषा के दो रूप हैं-1 मौखिक भाषा 2 लिखित भाषा। 2. भाषा को लिखित रूप देने के लिए जिन चिह्नों को निश्चित किया गया है, उन्हें लिपि कहते हैं। 3. व्याकरण के द्वारा हम भाषा को शुद्ध रूप से पढ़ना, लिखना और बोलना सीखते हैं। 4. व्याकरण के मुख्यत: तीन अंग माने जाते हैं-(1) वर्ण विचार (2) शब्द विचार (3) वाक्य विचार। 5. किसी सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा को बोली कहते हैं। **(ख)** 1. हिंदी 2. अंग्रेजी 3. व्याकरण 4. भाषा **(ग)** 1. ब 2. द 3. ब 4. स **(घ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ 6. ✓ **(ङ)** 1. हरियाणवी, हिंदी 2. भोजपुरी, हिंदी 3. हिमाचली, हिंदी 4. गुजराती, हिंदी **(च)** 1. (स) 2. (द) 3. (र) 4. (ब) 5. (य) 6. (अ), **(छ) बोली**- गढ़वाली, भोजपुरी, हिमाचली, हरियाणवी; **लिपि**- देवनागरी, गुरुमुखी, रोमन, फारसी; **भाषा**- उर्दू, गुजराती, पंजाबी, हिंदी, अंग्रेजी।

2. वर्ण और शब्द

(क) 1. भाषा की वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं, उसे वर्ण कहते हैं। वर्ण मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं-(1) स्वर (2) व्यंजन 2. **स्वर**-जिन वर्णों का उच्चारण किसी वर्ण की सहायता के बिना स्वतंत्र रूप से होता है, उन्हें स्वर कहते हैं। हिंदी भाषा में ग्यारह (11) स्वर होते हैं- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ। स्वर के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं-(क) ह्रस्व स्वर **(ख)** दीर्घ स्वर **(ग)** प्लुत स्वर। 3. दो व्यंजनों के मेल से बनने वाले व्यंजन को संयुक्त व्यंजन कहते हैं। 4. वर्णों के मेल से बने सार्थक ध्वनि-समूह को शब्द कहते हैं। शब्दों का वर्गीकरण निम्नलिखित चार आधारों पर किया जाता है-(1) उत्पत्ति के

आधार पर (2) बनावट के आधार पर (3) अर्थ के आधार पर (4) प्रयोग के आधार पर 5. उत्पत्ति के आधार पर शब्द चार प्रकार के होते हैं- **(क)** तत्सम शब्द **(ख)** तद्भव शब्द **(ग)** देशज शब्द **(घ)** विदेशी शब्द या आगत शब्द। **(ख)** 1. विलोम 2. सार्थक 3. व्यंजन 4. चार 5. अविकारी **(ग)** 1. स 2. ब 3. ब 4. स 5. ब **(घ)** 1. **क्ष**-क्षणिक क्षत्रिय, **ज्ञ**-ज्ञाता अज्ञानी, **त्र**-त्रिकोण त्रिनेत्र, **श्र**-श्रमिक श्रावण

(ङ) भ्+आ+र्+अ+त्+अ 2. उ+त्+स्+अ+व्+अ 3. द्+इ+ल्+ल्+ई 4. व्+इ+श्+व्+अ **(च) स्पर्श व्यंजन**- ठ, क, ढ, च, फ, इ, ख, झ, ब, म, ग, त; **अंतःस्थ व्यंजन**- य, र, ल, व, **ऊष्म व्यंजन**- श, ष, स, ह **(छ)** 1. संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, 2. पंकज, चारपाई, नीलकंठ, 3. कूप, नेत्र, अग्नि, 4. पगड़ी, पैसा, लोटा **(ज) तत्सम**- दंत, कवि, मयूर, वायु; **तद्भव शब्द**- दूध, आग, **देशज शब्द**-पिता, पैसा, पगड़ी, थैला, लोटा, खिड़की, **विदेशी**- स्टेशन, रोड, कॉपी, अमीर, साइकिल, अलमारी, **(झ)** 1. संतरा 2. पाँच 3. चाँद कंघा 5. कंगारू 6. पंख **(ञ) विकारी शब्द**- मेज, मंदिर, सैनिक, घोड़ा, लड़का; **अविकारी शब्द**- पर, तथा, ओह, सुंदर, तेज, धीरे-धीरे, यहाँ, ऊपर, लंबा, प्रकृति **(ट)** 1. पाठशाला 2. रसोईघर 3. रेलगाड़ी 4. देशभक्त 5. जलचर 6. नीलकंठ।

3. संज्ञा

(क) 1. प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। 2. संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद होते हैं- व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा। 3. किसी प्राणी, वस्तु या स्थान के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। 4. जिन शब्दों से किसी समूह या समुदाय का बोध होता है, उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे-सेना, सभा, कक्षा, टोली आदि। **(ख)** 1. गंदगी 2. पढ़ने 3. सुंदरता 4. सफाई 5. वीरता **(ग)** 1.ब 2. अ 3. स 4. अ **(घ)** 1. **जातिवाचक**-भक्त, **व्यक्तिवाचक**-मीरा, श्रीकृष्ण 2. **जातिवाचक**-प्रतिमा, **व्यक्तिवाचक**-सुभाष चौक 3. **जातिवाचक**-इमारतें, **व्यक्तिवाचक**-दिल्ली 4. **जातिवाचक**-घोड़ा, **व्यक्तिवाचक**-चेतक 5. **जातिवाचक**- राजा, **व्यक्तिवाचक**-भारत 6. **जातिवाचक**-बालक, मोहन **(ङ)** 1. सेवा 2. मातृत्व 3. शत्रुता 4. ऊँचाई 5. सरलता 6. कालिमा 7. अपनापन 8. भक्ति 9. मधुरता **(च)** मूर्खता, मिठास, अच्छाई, मानवता, देवत्व, सेवा, हरियाली, अहंकार, हँसी, कमाई, बालकपन **(छ) व्यक्तिवाचक संज्ञा**- राघव, दिल्ली, आदमी, गंगा,

महाभारत, **जातिवाचक संज्ञा**- पशु, चिड़ियाघर, सेना, **भाववाचक संज्ञा**- शैशव, दया, दासता, सज्जनता।

4. लिंग

(क) 1. पुरुष या स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द लिंग कहलाते हैं। 2. लिंग के दो भेद होते हैं- पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग। 3. संज्ञा शब्द के जिस रूप से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं। जैसे-छात्र, अध्यापक, सेठ, घोड़ा, शेर, बंदर आदि। संज्ञा शब्द के जिस रूप से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे-छात्रा, अध्यापिका, सेठानी, घोड़ी, शेरनी, बंदरिया आदि। 4. (i) अंतिम 'अ' को 'आ' में बदलकर-**पुल्लिंग** छात्र, बाल, **स्त्रीलिंग**-छात्रा, बाला (ii) अंतिम 'अ' या 'आ' को 'ई' में बदलकर **पुल्लिंग**-देव बेटा, **स्त्रीलिंग**-देवी, बेटी। (iii) अंतिम 'अक' को 'इका' में बदलकर- **पुल्लिंग**- याचक, नायक, पाठक **स्त्रीलिंग**- याचिका, नायिका, पाठिका, (iv) अंत में 'नी' जोड़कर-**पुल्लिंग**- मोर, चोर, जाट, **स्त्रीलिंग**- मोरनी, चोरनी, जाटनी, (v) अंत में 'आनी' या 'आणी' जोड़कर-**पुल्लिंग**- देवर, इंद्र, **स्त्रीलिंग**- देवरानी, इंद्राणी, **(ख)** 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. स्त्रीलिंग **(ग)** 1. अ 2. ब 3. स **(घ) पुल्लिंग शब्द**- सोमवार, भारत, सूर्य, ताँबा, गुलाब, गेहूँ, **स्त्रीलिंग शब्द**- मिलावट, मछली, पृथ्वी, चाँदी, नदी, नागिन, **(ङ)** 1. प्रिया 2. वधू 3. धोबी 4. लुटिया 5. जेठानी 6. सम्राट 7. गायिका 8. पहाड़ी 9. आत्मजा 10. सम्राज्ञी 11. विदूषी 12. पुत्र 13. नर कोयल 14. मादा मगरमच्छ 15. पंडित **(च)** 1. दर्जिन सम्राज्ञी के कपड़े सिलती है। 2. फिल्म की नायिका महान अभिनेत्री थी। 3. नौकरानी रसोईघर में थी। **(छ)** पृथ्वी-स्त्रीलिंग, दासी-स्त्रीलिंग, सत्यवान-पुल्लिंग, डाकखाना-पुल्लिंग, कावेरी-स्त्रीलिंग, भारत-पुल्लिंग, सब्जी-स्त्रीलिंग, धाविका-स्त्रीलिंग, चालक-पुल्लिंग, श्रीलंका-पुल्लिंग, हिमालय-पुल्लिंग, शनि-पुल्लिंग **(ज)** 1. ममता, क्षमता, पशुता 2. गौरैया, मुर्गी, बतख 3. भ्रातृत्व, नेतृत्व, कवित्व 4. शेर, घोड़ा, हाथी 5. छाता, मच्छर, पौधा 6. गिलहरी, कोयल, मछली

5. वचन

(क) 1. शब्द के जिस रूप से किसी प्राणी या वस्तु के एक या अनेक होने का ज्ञान हो, उसे वचन कहते हैं। 2. हिंदी में वचन के दो भेद होते हैं- 1 एकवचन, 2 बहुवचन।

3. शब्द के जिस रूप से एक प्राणी, वस्तु या पदार्थ का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे- बेटा, रोटी, पुस्तक, घोड़ा, आदि। शब्द के जिस रूप से एक से अधिक प्राणियों, वस्तुओं अथवा पदार्थों का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे- बेटे, रोटियाँ, पुस्तकें, घोड़े आदि। 4. आकारांत पुल्लिंग शब्दों में अंतिम 'आ' को 'ए' कर दिया जाता है। अकारांत स्त्रीलिंग शब्द के अंत में 'एँ (ँ) जोड़ दिया जाता है। **(ख)** 1. ऋतुएँ 2. कोयलें 3. चूड़ियाँ 4. मक्खियाँ 5. लड़कियाँ **(ग)** 1. अ 2. अ 3. अ 4. ब **(घ)** 1. माला 2. तोता 3. रानी 4. नेता 5. अमीर 6. शीशा 7. संत 8. मक्खी 9. लता 10. बूँद 11. विधि 12. लड़की **(ङ)** 1. कीड़े 2. रस्से 3. दलित समाज 4. प्रजाजन 5. छात्राएँ 6. आपलोग 7. बिटियाँ 8. चाबियाँ 9. गरीब लोग 10. नीतियाँ 11. बातें 12. श्रमिकवर्ग **(च)** 1. बहुवचन 2. बहुवचन 3. एकवचन 4. बहुवचन 5. बहुवचन 6. एकवचन 7. बहुवचन 8. एकवचन 9. बहुवचन 10. एकवचन 11. बहुवचन 12. बहुवचन (छ) 1. लड़के खेल रहे थे। 2. बंदर टोपी उठाकर ले गया। 3. शीशे टूट गए। 4. नेतागण कमरे में बैठे थे। 5. कलियाँ खिल रही हैं। 6. कक्षा में सभी बातें कर रहे थे। 7. लता फैल रही है। 8. पुस्तकें अलमारी में रखी हैं। **(ज)** 1. हाथी ने कुछ गन्ने खा लिए। 2. भूकंप में कई इमारतें गिर गईं। 3. सभी लड़कियों ने नृत्य किया। 4. हर रोज दादी माँ मुझे एक कहानी सुनाती हैं। 5. तेज हवाएँ चलने से पेड़ पर लगी सभी पत्तियाँ टूट गईं।

6. कारक

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य की क्रिया या अन्य शब्दों से जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं। प्रियंका ने केक बनाया। शुभ ने कलम से पत्र लिखा। भूमि ने आँगन में रंगोली बनाई। उपर्युक्त उदाहरणों में 'ने', 'से' वाक्यों की संज्ञा का संबंध क्रियाओं क्रमशः बनाया व लिखा से बता रहे है। अतः 'ने, से' कारक हैं। 2. प्रियंका ने केक बनाया। शुभ ने कलम से पत्र लिखा। भूमि ने आँगन में रंगोली बनाई। उपर्युक्त वाक्यों में 'ने, से, में' इन वाक्यों को अर्थपूर्ण बना रहे हैं, इन्हें ही कारक चिह्न, परसर्ग या विभक्ति चिह्न कहते हैं। कर्ता कारक की विभक्ति 'ने' है। कर्म कारक की विभक्ति 'को' है। करण कारक की विभक्ति 'से, के द्वारा' है। संप्रदान कारक की विभक्ति 'को, के लिए' है। अपादान कारक की विभक्ति 'से (पृथकता के भाव में)' है। संबंध कारक की विभक्ति 'का, की, के, रा, री, रे, ना, नी,

ने' है। अधिकरण कारक की विभक्ति 'में, पर' है। संबोधन कारक की विभक्ति 'हे, अरे, हो, रे' है। 3. **कारक आठ प्रकार के होते हैं**-(i) कर्ता कारक (ii) कर्म कारक (iii) करण कारक (iv) संप्रदान कारक (v) अपादान कारक (vi) संबंध कारक (vii) अधिकरण कारक (viii) संबोधन कारक **विभक्ति चिह्न (परसर्ग)**-ने को से, के द्वारा।, को, के लिए।, से (पृथकता के भाव में)।, का, की, के; रा, री, रे; ना, नी, ने। में, पर। हे, अरे, हो, रे; **कर्ता कारक**-'कर्ता' का अर्थ होता है- कार्य को करने वाला। वाक्य में शब्द के जिस रूप से क्रिया करने वाले का बोध हो, उसे कर्ता कारक कहते हैं। जैसे- गाँधी जी अपने आचरण का ध्यान रखते थे। मैं कल मुंबई जाऊँगा। अंगुलिमाल निर्दयी डाकू था। बच्चों ने कविताएँ सुनाईं। **कर्म कारक**-क्रिया के कार्य का फल जिस पर पड़ता है, वह कर्म कारक कहलाता है। इसका विभक्ति चिह्न 'को' होता है; जैसे- अध्यापक ने छात्रों को पढ़ाया। माता ने बच्चे को खाना खिलाया। **करण कारक**-क्रिया करने का साधन या माध्यम करण कारक होता है; करण कारक के साथ 'से, के द्वारा' परसर्ग लगाया जाता है। जैसे-मोना बस से गाँव गई। सीढ़ी से ऊपर आ जाओ। **संप्रदान कारक**-जिस संज्ञा या सर्वनाम के लिए कुछ किया जाता है या उसे कुछ दिया जाता है, वह संप्रदान कारक होता है। संप्रदान कारक में 'को' के लिए' परसर्गों का प्रयोग होता है; जैसे-माँ के लिए फल लाओ। गरीबों को भोजन दो। **अपादान कारक**-संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिसके द्वारा अलग होने का बोध होता है, वह अपादान कारक कहलाता है। इसका विभक्ति चिह्न 'से' होता है; जैसे- वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।, विपिन कमरे से बाहर आ गया। **संबंध कारक**-संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु का दुसरी वस्तु के साथ संबंध ज्ञात हो, उसे संबंधकारक कहते हैं। इसके विभक्ति-चिह्न 'का, के, की; रा, रे, री; ना, ने, नी' हैं; जैसे-यह सोहन का घर है।, वह उनकी पुस्तक है। **अधिकरण कारक**- संज्ञा के जिस रूप से आधार प्रकट होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसका विभक्ति-चिह्न 'में' व 'पर' हैं। जैसे- बंदर पेड़ पर बैठा है।, रमन कमरे में सो रहा है। **संबोधन कारक**- संज्ञा के जिस रूप से किसी को संबोधित किया जाए, वह संबोधन कारक कहलाता है। इसके विभक्ति-चिह्न 'हे', 'रे' आदि हैं। जैसे- हे अशरफ! जरा इधर आओ। इस वाक्य में 'हे अशरफ' संबोधन कारक है। 4. **करण कारक और अपादान कारक में अंतर**-इन दोनों कारकों में 'से' विभक्ति का प्रयोग होता है। करण कारक में इसका

प्रयोग साधन के अर्थ में होता है जबकि अपादान कारक में अलग होने या तुलना के अर्थ में होता है। निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए–माताजी चाकू से फल काट रही हैं। हम रेल से कोलकाता जाएँगे। हम अपनी जीभ से बोलते हैं। इन वाक्यों में चाकू, रेल और जीभ क्रिया के साधन हैं। अत: यहाँ 'से' विभक्ति करण कारक की सूचक है। **(ख)** 1. की 2. को 3. ने 4. पर 5. के लिए **(ग)** 1. द 2. स 3. ब **(घ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ **(ङ)** 1. करण 2. कर्म 3. अधिकरण 4. अपादान 5. संबंध **(च)** में–अधिकरण, की–संबंध, के द्वारा–करण, के लिए–संप्रदान, अरे!–संबोधन, ने–कर्ता **(छ)** 1. चोर को पकड़ लो। 2. छोटी बच्ची खिलौनों से खेल रही थी। 3. तुमने किसको बुलाया था। 4. सचिन ने खाना खाया।

7. सर्वनाम

(क) 1. संज्ञा शब्द के स्थान पर जो शब्द प्रयोग किए जाते हैं, वे सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–वह, यह, उसे, मेरी आदि। 2. (i) **पुरुषवाचक सर्वनाम**–जो शब्द कहने वाले (वक्ता), सुनने वाले (श्रोता) अथवा जिसके बारे में कुछ कहा जाए, इन तीनों पुरुषों का बोध कराएँ, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–मैं, हम, मैंने, हमने, तुम, आप, वह आदि। **(क) उत्तम पुरुष**–मैं, मैंने, मुझे, हम, हमें, हमको, आदि। **(ख) मध्यम पुरुष**–तू, तुम, आप आदि। **(ग) अन्य पुरुष**–वह, वे, उसने, उसे, उन्हें, उन्होंने आदि। (ii) **निश्चयवाचक सर्वनाम**– जिन सर्वनामों से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध हो, उन्हें निश्चयवाचक या संकेतवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे– यह, वह, ये, वे। (iii) **अनिश्चयवाचक सर्वनाम**– वे सर्वनाम शब्द जिनसे किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध न हो, अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे– कोई, कुछ, किसी। (iv) **प्रश्नवाचक सर्वनाम**– वे शब्द जिनका प्रयोग प्रश्न पूछने या किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के विषय में कुछ पूछने के लिए किया जाता है; प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे–कौन, क्या आदि। (v) **संबंधवाचक सर्वनाम**–जो सर्वनाम वाक्य में आने वाले दूसरे सर्वनाम से संबंध बताते हैं, संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–जो, जिसने आदि। (vi) **निजवाचक सर्वनाम**–जिन सर्वनाम शब्दों से अपनत्व या निजत्व का बोध होता है, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–अपना, अपनी, निजी आदि। 3. स्वयं करें। 4. कोई, कुछ। **वाक्य प्रयोग**–कोई आया है। बच्चों को कुछ रुपए दो। 5. प्रश्नवाचक। **वाक्य प्रयोग**–रवि क्या कह रहा

है? दरवाजे पर कौन खड़ा है? **(ख)** 1. कौन 2. कुछ 3. अपना 4. वही 5. किसी की **(ग)** 1. ब 2. स 3. स 4. स **(घ)** मुझे, तुम्हारी, तुम, हमने **(ङ)** 1. निजवाचक 2. प्रश्नवाचक 3. संबंधवाचक 4. अनिश्चयवाचक 5. संबंधवाचक **(च)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗ **(छ)** 1. बाहर कौन खड़ा है? 2. खाने को कुछ दो। 3. मैं घर जा रहा हूँ। 4. विवेक स्वयं विद्यालय चला जाएगा। 5. कोई दरवाजे पर खड़ा है। 6. वह खेल रहा है। 7. आप क्या खा रहे हैं? 8. यह वही लड़का है जो प्रथम आया था। **(ज)** 1. किसका सामान लाए हो? 2. अब मैं बताता हूँ, सुनो। 3. तुम्हें क्या चाहिए। 4. तुम अपने घर जाओ। 5. मेरा भाई आया है।

8. विशेषण

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं; जैसे–मोटा, चार, थोड़े। 2. जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, वे विशेष्य कहलाते हैं; जैसे–बंदर, थोड़े, फूल 3. विशेषण के पाँच भेद होते हैं–गुणवाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण व व्यक्तिवाचक विशेषण। 4. **परिमाणवाचक विशेषण**–जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा, माप, तौल आदि बताते हैं, वे परिणामवाचक विशेषण होते हैं; जैसे–कुछ, इतना, थोड़ा, बहुत, अधिक, तनिक, मुट्ठीभर, टोकरी–भर, घड़ाभर आदि। 5. कुछ शब्दों का प्रयोग परिमाणवाचक और संख्यावाचक विशेषण दोनों के लिए होता है; जैसे–कम, कुछ, थोड़ा, बहुत आदि। यदि विशेष्य गिनी जा सकने वाली वस्तु है, तो उसके साथ प्रयुक्त विशेषण संख्यावाचक माना जाता है। यदि विशेष्य गिनी न जा सकने वाली वस्तु है तो उसे परिमाणवाचक माना जाता है। **उदाहरण देखिए**– **(ख)** 1. दो 2. यह 3. परम 4. मधुर 5. कुछ **(ग)** 1. अ 2. अ 3. ब **(घ)** 1. कुछ कुत्ते 2. सुयोग्य वर 3. मैले वस्त्र 4. उपयोगी पशु 5. सरल और सुबोध भाषा 6. एक लीटर दूध **(ङ)** 1. **उस** (सार्वनामिक विशेषण) 2. **वह** (सर्वनाम) 3. **हम** (सर्वनाम) 4. **वे** (सर्वनाम) 5. **इस** (सार्वनामिक विशेषण) **(च) विशेषण**– 1. गहरा 2. दो 3. थोड़ा 4. बहुत 5. बड़ा, **भेद**–1. गुणवाचक 2. निश्चित संख्यावाचक 3. अनिश्चित परिमाणवाचक 4. अनिश्चित परिमाणवाचक 5. अनिश्चित परिमाणवाचक **(छ)** सुंदर, काले, खट्टे, सुंदर, मधुर, बड़ी, पतला, मोटा, नीली, तेज, काली, मेहनती **(ज)** 1. दानी 2. पूज्य 3. गरीबी 4. सांसारिक 5. शहरी 6. रसीला 7. पर्वतीय 8. सरकारी 9. दयालु 10. धार्मिक 11. दैनिक 12. ऊपरी।

9. क्रिया और काल

(क) 1. जिस शब्द से किसी कार्य का करना या होना प्रकट हो, उसे क्रिया कहते हैं; जैसे- खेलना, देखना, पढ़ना आदि। 2. क्रिया के मुख्यत: दो भेद होते हैं- (i) अकर्मक क्रिया (ii) सकर्मक क्रिया 3. क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। 4. क्रिया के जिस रूप से उसके होने या करने के समय का पता चले, उसे काल कहते हैं। 5. काल के तीन भेद होते हैं-(i) वर्तमान काल (ii) भूतकाल (iii) भविष्यत्काल 6. **भूतकाल**-क्रिया के जिस रूप से उसके बीते हुए समय में होने का बोध हो उसे भूतकाल कहते हैं; जैसे-रवि पुस्तक पढ़ रहा था। मोहन खेल रहा था। श्रीराम ने रावण को मारा। **(ख)** 1. सकर्मक 2. क्रिया 3. कर्म 4. भूतकाल 5. भविष्यत्काल 6. वर्तमान काल **(ग)** 1. द 2. अ 3. ब 4. ब **(घ) क्रिया**- 1. पी है 2. खेल रहे थे 3. पकड़ा 4. जाएगा 5. पढ़ता है 6. जाऊँगा 7. चल रही है। **काल का भेद**-1. वर्तमान काल 2. भूतकाल 3. भूतकाल 4. भविष्यत्काल 5. वर्तमानकाल 6. भविष्यत्काल 7. वर्तमानकाल **(ङ)** 1. **अकर्मक क्रिया**-उड़ेगी, 2. **अकर्मक क्रिया**- रो रहा है 3. **सकर्मक क्रिया**-लिखूँगा 4. **सकर्मक क्रिया**-लाए, 5. **सकर्मक क्रिया**-खाएँगे, 6. **अकर्मक क्रिया**-हँसेगा, 7. **अकर्मक क्रिया**-सो रही है। 8. **सकर्मक क्रिया**-पढ़ रहे हैं। **(च)** 1. **क्रिया शब्द**-आएँगे, **धातु**-आ 2. **क्रिया शब्द**-पढ़ी, **धातु**-पठ 3. **क्रिया शब्द**-हँस रहे थे, **धातु**-हँस 4. **क्रिया शब्द**-जाओगे, **धातु**-जा, 5. **क्रिया शब्द**-खाया, **धातु**-खा 6. **क्रिया शब्द**-लिखता है, **धातु**-लिख **(छ)** 1. बादल की गर्जना सुनो। 2. पक्षियों को आकाश में उड़ना अच्छा लगता है। 3. वह फिल्म देखना चाहता है। 4. उसे पत्र लिखना है। 5. वह मैदान से भागना चाहता था। 6. मुझे अभी नहाना है।

10. अव्यय

(क) 1. जिस शब्द से क्रिया की विशेषता प्रकट हो, उसे क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे- मनोज नीचे खड़ा है।, खरगोश तेज दौड़ता है।, हम रोज सैर पर जाते हैं। 2. क्रियाविशेषण के चार भेद होते हैं-(i) कालवाचक क्रियाविशेषण-जैसे-वह प्रतिदिन व्यायाम करता है। वह काम जल्दी निबटा देता है।, (ii) स्थानवाचक क्रियाविशेषण-जैसे- वहाँ अंधकार छाया है। उसे इधर-उधर मत जाने देना।, (iii) रीतिवाचक क्रियाविशेषण-जैसे-वह अचानक गिर पड़ा। राम धीरे-धीरे खाता है।, यह कार्य उसने जैसे-तैसे पूरा किया। (iv) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण-जैसे-वह बहुत

अधिक बोलता है। कम तोलना बेईमानी है। 3. **रीतिवाचक क्रियाविशेषण**–क्रिया होने का ढंग या रीति बताने वाले शब्दों को रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे–वह अचानक गिर पड़ा। राम धीरे–धीरे खाता है।, यह कार्य उसने जैसे–तैसे पूरा किया। 4. दो शब्दों, वाक्यों या उपवाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले अविकारी शब्दों को समुच्चयबोधक या योजक कहते हैं; जैसे–या, और, ताकि। 5. जो अव्यय शब्द हर्ष, विस्मय, दु:ख, घृणा आदि का भाव प्रकट करते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक कहते हैं। जैसे–उफ्, वाह, सावधान। 6. विस्मयादिबोधक अव्यय के 8 निम्नलिखित प्रमुख भेद हैं–(i) हर्षबोधक– वाह–वाह! अहा! शाबाश! धन्य! आदि। (ii) आश्चर्यबोधक– अरे! ओह! हैं! वाह! खूब! अच्छा! आदि। (iii) शोकबोधक– हाय! अरे! हे राम! आह! अफसोस! आदि। (iv) घृणाबोधक–छि:छि:! दूर–दूर! धिक–धिक! दूर हट! आदि। (v) आशीर्वादबोधक–जय हो! जीते रहो! शतायु हो! आदि। (vi) संतोषबोधक– बहुत अच्छा! बहुत सुंदर! बिल्कुल ठीक! आदि। (vii) संबोधनबोधक– सुनो! देखो! इधर आओ! आदि। (viii) धिक्कारबोधक– शर्म–शर्म! हाय–हाय! धिक्कार है! आदि। **(ख)** 1. के विरुद्ध 2. के जैसी 3. के पीछे 4. के सामने 5. के ऊपर **(ग)** 1. स 2. स 3. ब 4. स 5. स **(घ)** 1. और 2. कि 3. और 4. इसलिए **(ङ)** 1. **आज**–कालवाचक 2. **बहुत**–परिमाणवाचक 3. **धीरे–धीरे**–रीतिवाचक 4. **तेजी से**–रीतिवाचक 5. **नित्य**–कालवाचक **(च)** 1. और 2. नहीं तो 3. यदि, तो 4. इसलिए 5. बल्कि **(छ)** 1. वाह! 2. अरे 3. अरे! 4. वाह–वाह! 5. शाबाश! **(ज)** सेनापति एक मंदिर के **पास** रुका। उसने सैनिकों को मंदिर के **बाहर** रुकने का आदेश दिया और कहा, ''प्यारे साथियों! मैं आपकी विजय की कामना लेकर मंदिर के **अंदर** जाऊँगा। आप यहीं ठहरें।'' यह कहकर वह मंदिर के **अंदर** चला गया। थोड़ी देर के बाद वह मंदिर से **बाहर** निकला।

11. वाक्य–विचार

(क) 1. सार्थक शब्दों का ऐसा समूह जो व्यवस्थित हो और कोई अर्थ देता हो, वाक्य कहलाता है। 2. वाक्य के दो अनिवार्य अंग होते हैं–(i) उद्देश्य (ii) विधेय। 3. अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं– **क.** विधानवाचक वाक्य **ख.** निषेधवाचक वाक्य **ग.** प्रश्नवाचक वाक्य **घ.** विस्मयादिबोधक वाक्य **ङ.** आज्ञावाचक वाक्य **च.** संदेहवाचक वाक्य **छ.** इच्छावाचक वाक्य **ज.** संकेतवाचक वाक्य 4. रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं– सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्य **(ख)** 1. दो

2. पेड़ के नीचे 3. अर्थ **(ग)** 1. स 2. अ **(घ)** 1. **उद्देश्य**–तुम्हारा बेटा **विधेय**–बुद्धिमान है। 2. **उद्देश्य**– उसने **विधेय**– पुस्तक पढ़ी। 3. **उद्देश्य**–मेरा मित्र **विधेय**–कल आ रहा है। 4. **उद्देश्य**–शुभ **विधेय**–मैच ना जीत सका। **(ङ)** 1. तितली उड़ रही है। 2. अध्यापक पढ़ा रहे हैं। 3. जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे। 4. विराट कोहली महान बल्लेबाज है।

12. शब्द भंडार

(क) 1. वे शब्द जिनके अर्थ प्रायः समान होते हैं, पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहलाते हैं। प्रमुख शब्द तथा उनके पर्यायवाची दिए गए हैं (i) **पृथ्वी**–धरा, धरित्री, भू, अवनि, वसुधा, वसुंधरा। (ii) **बिजली**– विद्युत, चपला, चंचला, दामिनी। 2. जो शब्द एक–दूसरे का विपरीत (उलटा) अर्थ प्रकट करते हैं, वे विलोम शब्द या विपरीतार्थक शब्द कहलाते हैं। **शब्द**–जन्म, ऊँचा, स्वस्थ। विलोम– मृत्यु, नीचा, अस्वस्थ 3. भाषा को सुंदर व संक्षिप्त करने के लिए हम वाक्यांश या अनेक शब्दों का प्रयोग न करके एक शब्द में ही अपनी बात कह देते हैं। इसे ही अनेक शब्दों या वाक्यांश के लिए एक शब्द कहा जाता है; जैसे–जिसका कोई आधार न हो–निराधार; जो जानता न हो–अनभिज्ञ, जो व्यर्थ व्यय (खर्च) करे–अपव्ययी। 4. वे शब्द जो उच्चारण में लगभग समान प्रतीत होते हैं; किंतु उनके अर्थ में भिन्नता होती है, उन्हें समश्रुति भिन्नार्थक शब्द कहते हैं। जैसे–अन्न–अनाज, अन्य–दूसरा, अलि–भौंरा, अली–सखी, चिर–सदैव, चीर–वस्त्र। **(ख)** 1. स्वस्थ 2. अनुपस्थित 3. जीत 4. आलसी 5. दिन **(ग)** 1. स 2. स 3. ब 4. ब 5. ब **(घ)** 1. रात 2. श्वेत 3. रूदन 4. विपक्ष 5. विषाद 6. मित्र 7. निर्धन 8. अपयश **(ङ)** 1. मेरू, शैल, नग 2. भागीरथी, सुरसरी, देवनदी 3. कमल, जलज, पंकज 4. धरा, भू, वसुधा, 5. अश्व, घोटक, तुरंग, 6. चपला, चंचला, दामिनी, **(च)** 1. जलज, नीरद, पवन 2. भ्रमर, पतंग 3. सूर्यपुत्री, दशानन, शचि 4. वंशीधर, दशानन 5. असुर, पंकज **(छ)** उत्थान–पतन, घृणा–प्रेम, तीव्र–मंद, मित्र–शत्रु, बहिन–भाई, सुख–दुख, रात्रि–दिवस, स्त्री–पुरुष, चर–अचर, राजा–रानी, जल–थल। **(ज)** 1. विधुर 2. अजातशत्रु 3. परोपकारी 4. नश्वर 5. अजेय 6. अद्वितीय **(झ)** 1. मृत्यु, गरीब 2. नीच, पाप 3. पृथ्वी, स्रोत 4. पुराना, वस्त्र 5. शव जलाने का स्थान, एक जानवर 6. धुरी, आँख 7. सोना, गेहूँ 8. कंधा, भाग **(ञ)** 1. निकम्मा 2. दार्शनिक 3. निर्भय 4. पुस्तकालय 5. सधवा 6. निर्दयी।

13. विराम-चिह्न

(क) 1. अपने भावों को प्रकट करने के लिए भाषा में बोलते समय और लिखते समय कुछ स्थानों पर रुकना पड़ता है। लिखते समय इस विराम को प्रकट करने के लिए हम जिन चिह्नों को प्रयोग करते हैं, उन्हें ही विराम-चिह्न कहते हैं। 2. वाक्य के बीच में लगने वाले-चिह्न **क. अल्पविराम** (,)- जब एक शब्द को दूसरे से अथवा एक उपवाक्य को दूसरे उपवाक्य से अलग करके दिखाना होता है, तो अल्पविराम लगाया जाता है। यह बुद्धिमान, परिश्रमी एवं आज्ञाकारी बालक है। **ख. अर्धविराम (;)**-जहाँ अल्पविराम की अपेक्षा कुछ अधिक रुकना होता है, वहाँ अर्धविराम चिह्न लगाया जाता है; जैसे-वह बहुत हट्टा-कट्टा है; परंतु साहसी नहीं है।, जो आज निर्धन है; कल वही धनी भी हो सकता है। 3. वाक्य के अंत में लगने वाले विराम-चिह्न **क. पूर्ण विराम (।)**-किसी बात के पूरा हो जाने पर इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। यह वाक्य की पूर्णता का बोध कराता है; जैसे-तुम अपना कार्य करो।, महात्मा गाँधी एक महान नेता थे। **ख. प्रश्नसूचक चिह्न (?)**-प्रश्नसूचक चिह्न का प्रयोग प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में किया जाता है; जैसे-तुम किस समय उठते हो?, क्या तुम दुकान से चीनी ले आओगे? **ग. विस्मयादिबोधक चिह्न (!)**- इसका प्रयोग हर्ष, शोक, घृणा तथा विस्मय आदि भावों को व्यक्त करने वाले वाक्यों में किया जाता है। जैसे- ओह! मुझे विश्वास नहीं हो रहा है। क्या मुसीबत है!, धत् तेरे की! 4. **कोष्ठक चिह्न (( ))**- वाक्य में किसी शब्द का अर्थ या जरूरी विवरण लिखना हो, तो उसे कोष्ठक में लिखा जाता है; जैसे-मेरे लिए कोई खाने की चीज (वस्तु) लाओ। **विवरण चिह्न (:-)**-इसका प्रयोग विवरण देने के लिए किया जाता है; जैसे- संज्ञा के तीन भेद हैं:- जातिवाचक संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा तथा भाववाचक संज्ञा। **(ख)** 1. विवरण-चिह्न 2. अर्धविराम 3. लाघव-चिह्न **(ग)** 1. स 2. ब 3. अ **(घ)** 1. शाम ढल गई थी। सुमन ने 'बालहंस' पढ़ना शुरू किया। 2. माँ ने पूछा कि समय क्या हुआ है। 3. नहीं, कश्मीर में तो शांति है। 4. चार शहरों के नाम बताइए। 5. हे भगवान, अब क्या होगा! **(ङ)** 1. अल्प विराम 2. विस्मयादिबोधक चिह्न 3. लाघव चिह्न 4. विवरण चिह्न 5. हंसपद चिह्न 6. प्रश्नसूचक चिह्न 7. पूर्ण विराम 8. योजक चिह्न 9. उद्धरण चिह्न **(च)** सुबह के पाँच बजे थे। बस्ती में हलचल शुरू हो गई। सभी अपने-अपने काम में लग गए। अम्मा ने सुलेखा से पूछा,

''बिटिया कॉलेज नहीं जाना है क्या? सुलेखा ने कहा- ''हाँ अम्मा जाना है। मैं तैयार ही हो रही थी।'' **(छ)** 1. वाह! कितना सुंदर दृश्य है। 2. हमें पाप-पुण्य का ध्यान रखकर कर्म करने चाहिए। 3. राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी भारत के महान नेता थे। 4. लालबहादुर शास्त्री का नारा था-'जय जवान, जय किसान।' 5. सुमित्रानंदन पंत भारत के सुप्रसिद्ध कवि हैं।

14. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

(क) 1. ऐसा वाक्यांश जो सामान्य से भिन्न किसी विलक्षण अथवा विशेष अर्थ की प्रतीति कराए और शाब्दिक अर्थ से भिन्न किसी अन्य अर्थ में रूढ़ हो जाए, मुहावरा कहलाता है। 2. लोगों में प्रचलित उक्ति को लोकोक्ति कहते हैं। लोकोक्ति का प्रयोग किसी विचार के समर्थन में स्वतंत्र वाक्य की तरह होता है। 3. लोकोक्ति का प्रयोग किसी विचार के समर्थन में स्वतंत्र वाक्य की तरह होता है। यह मुहावरे की तरह वाक्य का अंश नहीं होती। इसका अर्थ सीधा और स्पष्ट होता है **(ख)** 1. स 2. स **(ग)** स्वयं करें **(घ)** 1. (द) 2. (य) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ) **(ङ)** स्वयं करें **(च)** 1. अँगूठा दिखाना 2. नौ-दो ग्यारह होना 3. पानी-पानी होना 4. कान भरना 5. आग बुझाना 6. उँगली उठाना **(छ)** 1. (स) 2. (अ) 3. (द) 4. (य) 5. (ब)